मार्च 2016

दादावाणी

कीमत ₹ 10

हृदयपूर्वक ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए
कि 'इस जगत् के भौतिक सुखों में से
मेरी इच्छाएँ खत्म हो जाएँ ऐसा कीजिए।'
अध्यात्म की याचना करना
उसीको सच्ची प्रार्थना कहते हैं।

प्रार्थना प्राप्त करवाए परमार्थ

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 11 अंक : 5
अखंड क्रमांक : 125
मार्च 2016

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

प्रार्थना प्राप्त करवाए परमार्थ

संपादकीय

प्रार्थना क्या है? विशेष अर्थ की याचना करना वह, विशेष रूप से रिक्वेस्ट। मनुष्य जब संसार में प्रार्थना करता है, तब शांति से परेशानी से बाहर निकलने के रास्ते मिलते हैं। लेकिन क्या प्रार्थना को उतने तक ही सीमित रखना कितना योग्य है? प्रार्थना तो आगे की लिंक खोल देती है।

परम पूज्य दादाश्री यहाँ दो प्रकार की प्रार्थनाएँ बताते हैं-एक सांसारिक अर्थ के लिए और दूसरा परमार्थ का अर्थ। संसार में जीवमात्र को बाहर की मुश्किलें तो हैं, लेकिन वास्तविक मुश्किलें हैं उसके अंदर के आंतरिक कषाय, राग-द्वेष, क्रोध, आसक्ति जो कि उसे खुद से विमुख कर देते हैं। जिससे अध्यात्म में आगे बढ़ने की भावना होती है, वह प्रार्थना बहुत कीमती चीज़ है। अगर सच्ची प्रार्थना की जाए, तो जवाब भी मिलता है और प्रार्थना के अनुसार फल भी मिलता है।

हमारे मन में एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि यदि परमात्मा अंतर्यामी हैं, वे हमारे बारे में सबकुछ जानते हैं, हमारे लिए क्या अच्छा और क्या बुरा है, वह भी जानते हैं, तो फिर हमें उनसे कहने की क्या ज़रूरत ही क्या है? जिसकी कमी है क्या वह याचना किए बगैर मिल नहीं जाएगा? और हम जो प्रार्थना करते हैं, क्या वह भगवान तक पहुँचती है? भगवान क्या कहते हैं? अगर तुम्हें संसार अच्छा लगता हो और दु:ख आए तो मुझसे प्रार्थना करना, तुझे शांति मिल जाएगी और अगर संसार अच्छा नहीं लगता तो मेरी शरण में आ जाना, फिर तू और मैं एक ही हैं फिर तुझे दु:ख है ही नहीं। भगवान तो वीतराग हैं वे लेने-देने नहीं बैठे हैं, भगवान तो सिर्फ प्रकाश देते हैं, यानी वास्तव में प्रार्थना तो आपके अंदरवाले अंतर्यामी भगवान को पहुँचती है। वास्तव में (सही मानो में) प्रार्थना में तो खुद के अंदर के परमात्मा को खोजना है। इसलिए प्रार्थना तो हररोज़ करनी चाहिए। उसकी तीव्रता, उत्कंठा में नित्य हृदयशुद्धि का बल बढ़ना चाहिए। ज्यों-ज्यों उसमें शुद्धता आती जाती है, त्यों-त्यों शब्दों के बल के बजाय, मौन प्रार्थना अधिक काम करती है।

प्रार्थना, वही परमात्मा से जुड़ने का सेतु है। सच्ची प्रार्थना से मनुष्य को सुख, शांति, शक्ति, आधार, आश्रय का अनुभव होता है। उसके पीछे रहस्य इतना ही है, कि प्रार्थना से परमात्मा की चेतना से अनुसंधान होता है (जुड़ते हैं)। अर्थात् खुद के अंदरवाले आत्मा से जुड़ना। निर्मल प्रार्थना में मनुष्य की चेतना का स्तर ही बदल जाता है। ज्यों-ज्यों प्रार्थना में शुद्धभाव आते हैं, त्यों-त्यों भगवान से अनुसंधान भी बढ़ता जाता है और त्यों-त्यों प्रेम, आनंद, शक्ति की अनुभूति होती है।

प्रार्थना यानी खुद के अंतर्यामी परमात्मा से वार्तालाप और वह भी वायरलेस वार्तालाप। यहाँ दादाश्री ने प्रार्थना का विज्ञान बताया है। जिसमें संसार से लेकर अध्यात्म तक की प्रार्थना की समझ देते हुए अंत में कहते हैं, सच्चे

हृदय से की गई प्रार्थना संसारी इच्छाओं की पूर्णाहुति करवाएगी, और साथ में खुद की अंतिम खोज भी पूर्ण करवाएगी। प्रार्थना, पुरुषार्थ और प्रारब्ध के बीच का सेतु है। मोक्षमार्ग में जब हम थक जाएँगे या कुछ रुकावट आएगी, लगेगा कि पुरुषार्थ नहीं हो पा रहा है, तब हृदयपूर्वक की गई प्रार्थना से आगे के अध्यात्मिक रास्ते खुलेंगे। अध्यात्म के लिए याचना करना वह प्रार्थना कहलाती है वह सब से अंतिम प्रार्थना है इसिलए बिल्कुल हृदय से और यर्थाथ होनी चाहिए।

प्रस्तुत अंक में परम पूज्य दादाश्री ने प्योर और नि:स्वार्थ निर्मल प्रार्थना का वैज्ञानिक रूप समझाया हैं। इसके बल से महात्मा आगे की अध्यात्मिक श्रेणियाँ चढ़ें, ऐसी अभ्यर्थना। - **जय सच्चिदानंद**

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

प्रार्थना प्राप्त करवाए परमार्थ

दादा खुला करते हैं प्रार्थना के रहस्य

प्रश्नकर्ता : दादा, दुनिया के हर एक धर्म-संप्रदाय में प्रार्थना करने के लिए कहा है, तो यह प्रार्थना का रहस्य क्या है? प्रार्थना क्या है?

दादाश्री : प्र + अर्थना = प्रार्थना। प्र यानी विशेष अर्थ की याचना करना, वह। भगवान से और अधिक अर्थ की याचना करना, वह। प्रार्थना यानी विशेष स्वरूप से रिक्वेस्ट (विनती)।

प्रश्नकर्ता : विशेष रूप से रिक्वेस्ट का अर्थ?

दादाश्री : हम इस संसार में जो रिक्वेस्ट करते हैं, उससे अलग प्रकार की रिक्वेस्ट।

प्रार्थना का अर्थ क्या है कि मनुष्य अंदर उलझन में रहता है, वह अर्थ यानी सांसारिक ज़रूरतें और प्रार्थना यानी भगवान से अर्थ की याचना करना। फिर चाहे भगवान कहो या ज्ञानीपुरुष कहो या सत्पुरुष कहो, उनसे प्रार्थना करना।

ऐसे मिलता है प्रार्थना का फल

प्रश्नकर्ता : प्रार्थना करने से क्या फल मिलता है?

दादाश्री : प्रार्थना का फल इतना ही है कि आप जिसके लिए (जो याचना करोगे वह मिलेगा), यह भौतिक सुख के लिए याचना करो तो उसका भौतिक फल मिलता है।

प्रश्नकर्ता : वह कौन देता होगा?

दादाश्री : देनेवाला कोई है ही नहीं। विसर्जन करनेवाला (कुदरती) कम्प्यूटर है यह सारा।

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन किसी को तो भौतिक सुख एडजस्ट करना पड़ता होगा न, प्रार्थना के पावर का?

दादाश्री : भौतिक सुख अर्थात् आप ही के किए हुए का फल है, और कुछ भी नहीं।

प्रश्नकर्ता : यानी आपका कहना यह है कि हमें प्रार्थना करने का मन करता है। इसका मतलब यह हुआ कि जब हमारे कुछ कर्म हट जाते हैं, उस समय हमें अच्छे कर्म करने का संकेत मिलता है?

दादाश्री : ऐसा है न कि हम हर एक व्यक्ति के साथ जो डीलिंग करते हैं अगर उसमें तय करें कि मुझे सुख ही देना है, किसी को दु:ख तो देना

ही नहीं। इसलिए अगर किसी के लिए दु:खदाई बन जाएँ, तो हमें उसे समझा-बुझाकर कहे कि 'भाई, मुझसे गलती हो गई।' ज्यों-त्यों करके उसका निबेड़ा ला देना है। यदि आप सुख ही देना चाहते हैं, तो उसके फल स्वरूप आपको सुख ही मिलेगा। और अगर ऐसा तय करोगे कि दु:ख देना है, तो दु:ख ही मिलेगा अब उससे (सुख देने से) क्रेडिट होता है और इससे (दु:ख देने से) डेबिट होता है। और जितना क्रेडिट है वह आपको इस जन्म में यहाँ पर घर बैठे यों ही प्राप्त हो जाता है। तय किए हुए सारे संयोगों का मिलना, वह क्रेडिट कहलाता है और तय किए हुए संयोगों का विरोध होना, वह डेबिट। इसलिए जो आपको चाहिए, वही सामनेवाले को दो।

भगवान तो सिर्फ प्रकाश ही देते रहते हैं। वे इसमें और कोई दखलंदाजी नहीं करते (भगवान तो कहते हैं) अगर तुम्हें ये भौतिक सुख अच्छे नहीं लगें तो मुझसे प्रार्थना करना उससे मेरे (साथ) अभेदभाव उत्पन्न हो जाएगा। उससे अभेदता हो जाएगी।

वह जोखिमदारी सभी आपकी

प्रश्नकर्ता : हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि 'हमें सद्‌बुद्धि देना।' अगर वे देनेवाले ही नहीं हैं, तो फिर हज़ारों वर्षों से ऐसी प्रार्थना करने का अर्थ क्या है?

दादाश्री : लेकिन वे देंगे कहाँ से? जब उनके पास सद्‌बुद्धि है ही नहीं! भगवान कहाँ से सद्‌बुद्धि देंगे? भगवान तो ज्ञानप्रकाश हैं सिर्फ। हमें तो भाव करना है कि मुझे सद्‌बुद्धि प्राप्त हो इसलिए अगर हम भाव करेंगे तो सद्‌बुद्धि प्राप्त होगी और अगर दुर्बुद्धि करें तो अपनी ही जोखिमदारी है ये सारी! अपना ही किया हुआ है ये सब और हम ही भुगतते हैं। होल एन्ड सोल (समग्र) ज़िम्मेदारी अपनी ही है। अगर संसार अच्छा न लगे तो भगवान को याद करना चाहिए कि मुझे आपके साथ रखिए तब वे साथ देंगे। तब तक वे साथ नहीं देंगे, तब तक वे वे प्रकाश देंगे। तुझे जो ठीक लगे, वह तेरी जोखिमदारी पर करता रह। चोरी करनी हो तो भी तेरी जोखिमदारी और दान देना हो तो भी तेरी जोखिमदारी। जोखिमदारी सारी तेरी! समझ में आया? मनुष्य काम करने के लिए स्वतंत्र है।

वीतरागों से प्रार्थना 100 गुना होकर फल मिले

प्रश्नकर्ता : अगर हम अभी महावीर (भगवान) से प्रार्थना करें तो क्या (वे) सुनेंगे?

दादाश्री : नहीं।

प्रश्नकर्ता : लोग मंदिर जाकर महावीर (भगवान) से प्रार्थना करते हैं, तो फिर प्रार्थना करने का अर्थ ही क्या है?

दादाश्री : वे कहीं सुनते करते नहीं हैं। हमें महावीर बनना है, इसलिए हम प्रार्थना करते हैं। हमें केवलज्ञानी बनना है, मोक्ष में जाना है इसलिए जिस रास्ते वे गए हैं उसी रास्ते पर हम आए हैं, इसीलिए उनके नाम का स्मरण करते हैं। बाकी, वे कुछ नहीं करते।

प्रश्नकर्ता : तो फिर महावीर भगवान उनकी सुनते हैं जो प्रार्थना करते हैं या उनकी जो प्रार्थना नहीं करते? तो वे किसकी सुनते हैं?

दादाश्री : नहीं! वे सुनें, तब भी काम का नहीं है। वीतराग सुनें तब भी काम का नहीं है न! हमें तो प्रार्थना करनी है, भगवान के नाम पर। वीतराग तो कुछ भी नहीं करते न! सुनें तब भी कुछ नहीं करते। वे खुद जब उपस्थित थे तब भी, सुनकर कुछ करते नहीं थे। वे तो वीतराग, खटपट नहीं। वीतराग क्या कहते हैं? कि 'तूने जो भाव किया, जो भाव मेरे पास भेजा, वह भाव हमने स्वीकार नहीं

किया, इसलिए वापस तेरे पास ही आएगा और हंड्रेड, 100 (गुना) होकर वापस आएगा। हम स्वीकार नहीं करते हैं इसलिए वह भाव वापस आएगा। इसलिए आपने जो प्रार्थना की थी न, उसका आपको 100 गुना फायदा मिल जाता है और अगर किसी व्यक्ति ने गाली दी, तो गालियाँ 100 गुना होकर वापस प्राप्त होती हैं। क्योंकि हम स्वीकार नहीं करते इसलिए 100 टाइम होकर वापस जाता है। रिटर्न विथ थेंक्स। (आभार के साथ वापस)'

प्रार्थना का फल देता कौन है?

प्रश्नकर्ता : भगवान को तो मोह-मान-माया कुछ भी नहीं होता, तो प्रार्थना का फल कौन देता है?

दादाश्री : नहीं, लेकिन वह उनके पास नहीं। ये जो संत हैं न, वहाँ प्रार्थना करने से फलित होती हैं, संसारी बातें। और अगर हम मुक्त होना चाहते हों तो भगवान से प्रार्थना चाहिए। मुक्त यानी जो मुक्त पुरुष होते हैं, वहाँ मुक्ति के लिए प्रार्थना होती है और अगर संसार की चीज़ें चाहिए, तो फिर जो संत होते हैं वे आशीर्वाद देते हैं। लेन-देन रहित आशीर्वाद दें तो काम हो जाता है।

सभी फल मिलते हैं हमें। खेत में जो बोते हैं न, वही फल आकर खड़े रहते हैं। तब अगर हमें ऐसा लगे कि बाजरे में मज़ा नहीं आया, तो इस साल उसे छोड़कर तम्बाकु बोना हैं। तम्बाकु में मज़ा नहीं आया तो अरहर बोना लेकिन हम जो बोते हैं उसी का फल मिलता है ये सब। इस संसार में, भगवान तो (खुद के) अंदर बैठे हैं न, वे खुद प्रकाश देते रहते हैं। कहते हैं 'तुझे जो भी चाहिए, मैं तो प्रकाश दूँगा और अगर तुझसे ये दु:ख सहन नहीं होते, तो मुझसे तो प्रार्थना करना, मेरे पास आ जा।' लेकिन ज्ञानीपुरुष के मिले बगैर उनके पास जाएँगे कैसे? वे फिर ज्ञानीपुरुष भी मुक्त होने चाहिए। ऐसे बंधे हुए हमें कैसे छुड़वाएँगे? छुड़वाएँगे क्या? कोई दु:खी व्यक्ति हमें दु:ख मुक्त कर सकेगा? अशांत व्यक्ति हमें शांति देगा? नहीं दे सकेगा इसलिए उसके लिए सच्चे ज्ञानीपुरुष की ज़रूरत है।

की हुई प्रार्थना बेकार नहीं जाती

प्रश्नकर्ता : इसलिए मैं रोज़ प्रार्थना करता हूँ, कि सद्गुरु की कृपा हो जाए तो अब हमें ये सब प्राप्त हो जाए।

दादाश्री : सही कहते हो। अंदर प्रार्थना करते हो न, अभी तो सुननेवाले भी है। कभी अगर सुननेवाले न भी हों, तो भी हमारी प्रार्थना जमा होती रहेगी। की हुई कोई भी प्रार्थना बेकार नहीं जाती।

प्रश्नकर्ता : क्या मन की प्रार्थना फलित होती है, अनिष्ट को दूर करने में?

दादाश्री : हाँ। आपके कोई भी इष्टदेव हों, चाहे किसी से भी आप प्रार्थना कर सकते हो। आखिर में दादा से भी प्रार्थना कर सकते हो कि हमारे परिवार की यह परेशानी दूर कर दिजीए। इतना तो होना ही चाहिए। इससे कोई भ्रष्ट नहीं हो जाते, हमारा ज्ञान भ्रष्ट नहीं हो जाता।

प्रार्थना में देवी-देवता भी निमित्त होते हैं

प्रश्नकर्ता : अब उसमें ये देवी-देवता, ईश्वर की प्रार्थना करने से जो व्यवस्थित आनेवाला है, उसमें कोई फर्क पड़ता है क्या?

दादाश्री : वह सब व्यवस्थित है। डॉक्टर का निमित्त हो, तो डॉक्टर की दवाई लेनी पड़ती है हमें। यानी वे भी निमित्त होते हैं। देवी-देवता भी निमित्त होते हैं। उनके साधन से ही फलित होता है। वे भी एक एविडेन्स हैं, समझ में आ रहा है? व्यवस्थित से परे नया कुछ भी नहीं होता। व्यवस्थित यानी, साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स।

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आ रहा है। अगर ऐसा समझे कि व्यवस्थित के आधार पर कोई सजा होनी है तो क्या प्रार्थना से वह कम हो सकती है?

दादाश्री : कम होने में वह निमित्त है, जो (जितनी) कम होती है वह। कोई हम से कहे कि भाई मेरे व्यवस्थित में जो होना होगा वह होगा, फिर भी हम उसे डॉक्टर की दवाई दें तो उसका दर्द कम होता है या नहीं होता? बस, उसी तरह व्यवस्थित के नियम में आ ही चुका है। ये सारे व्यवस्थित के ही एविडेन्स हैं। हमें ऐसा लगता है, कि हमने प्रार्थना की इसलिए यह फल मिला। (वास्तव में) प्रार्थना करते नहीं हैं, प्रार्थना हो जाती है। क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : हो जाती है।

दादाश्री : करना और हो जाना दो अलग चीज़ें हैं। जो हो जाता है, वह व्यवस्थित करवाता है जबकि 'करने' में वह कर्ता बनता है। यानी देवी-देवता की पूज़ा-वूजा वगैरह जो हो जाता है वह व्यवस्थित हो जाता है, कर्ता नहीं हैं हम। हमें लगता है कि 'यह मैं कर रहा हूँ' व्यवहार में ऐसे शब्द बोलते हैं लेकिन हम कर्ता नहीं हैं, हो जाता है। जब खुद कर्ता बनता है तब वहाँ कर्म बंधते हैं हमेशा।

जाप-यज्ञ नहीं, प्रार्थना ही पहुँचती है

प्रश्नकर्ता : मैं राम का नाम लूँ या कृष्ण का या महावीर का, तो वह पहुँचता किसे है?

दादाश्री : पहुँचाने के लिए नहीं लेते। वह तो 'राम' वाला फिर अगर बहुत स्पीडी (जल्दी-जल्दी) बोले न तो 'मरा, मरा' करता रहता है। तब 'राम' बोल रहा है या 'मरा' बोल रहा है वह क्या पता चले हमें? अत: पहुँचाने के लिए नहीं बोलते।

प्रश्नकर्ता : तो यदि उन तक पहुँचाना हो तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : पहुँचाने के लिए नहीं बोलते। ये जो जाप-यज्ञ करते हैं, वे तो खुद की शांति के लिए करते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो उनके देवताओं तक तो पहुँचेगा न?

दादाश्री : प्रार्थना करने से पहुँचता है लेकिन जाप-यज्ञ करने से नहीं पहुँचता। प्रार्थना को तो स्वीकार भी करते हैं लेकिन जाप-यज्ञ तो खुद की शांति के लिए हैं। 'राम, राम, राम, राम' करते हैं। 'हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण' करते रहते हैं अगर ऐसे मंत्र बोलते हैं, तो वह खुद की शांति के लिए है।

प्रश्नकर्ता : अब जो नवकार मंत्र बोलते हैं, 'नमो अरिहंताणं, भले ही जैनों को पता न हो फिर भी वह सीमंधर स्वामी तक पहुँचता तो है न?

दादाश्री : वह एक प्रार्थना है। ब्रह्मांड में ऐसे जो कोई भी हैं, उन्हें मैं नमस्कार करता हूँ।

प्रश्नकर्ता : हाँ-हाँ, लेकिन वह सीमंधर स्वामी को जानता न हो तो भी पहुँचेगा तो सही न, उन्हें?

दादाश्री : उन तक (उन्हें) पहुँचना अर्थात् क्या? आपको उसका लाभ मिलेगा, (फायदा होगा) उन तक पहुँचने का। वीतरागों को पहुँचा, तो वीतराग तो स्वीकार नहीं करते। तीर्थंकरों का मन समयवर्ती (समय के अनुसार वर्तन) होता है, इसलिए उन तक हमारी कोई बात नहीं पहुँचती है न, और (उनका) मन स्वीकार भी नहीं करता। उनके सभी मातहत, अन्डरहैन्ड को पहुँचता है।

प्रश्नकर्ता : यों नहीं! राम को तो वे भगवान की तरह याद करते हैं न?

दादाश्री : हाँ, तो कौन मना कर रहा है? लेकिन राम तो मोक्ष में चले गए हैं। राम को क्या लेना-देना है? कुछ भी देते करते नहीं हैं। प्रार्थना होगी तो मिलेगा और प्रार्थना में वे नहीं देते, सबकुछ अंदर से ही मिलता है।

अंदरवाले भगवान से प्रार्थना

प्रश्नकर्ता : तो हम किससे प्रार्थना करते हैं? हमें किसे समझना चाहिए?

दादाश्री : ऐसा है न, हमें, जो मोक्ष स्वरूप भगवान हैं उनसे प्रार्थना करनी हैं। भगवान भी कैसे मिलेंगे? ये तो जो अंदर भगवान बैठे हैं वे सुनते हैं। कृष्ण का नाम लो या महावीर का लो या राम का लो लेकिन अंदर जो बैठे हैं वे सुनते हैं। बाहरवाले दूसरे कोई सुनने आनेवाले नहीं हैं। आपके अंदर, अंदरवाले भगवान सुनेंगे। इसलिए सीधे अंदरवाले भगवान से ही बात करो न! उनका नाम क्या है? 'हे शुद्धात्मा भगवान! ऐसा कहकर आप बात करना। बाहरवाले को दलाली देनी और उससे फिर सब बँट जाता है और आखिर में वे तो यहीं पर ही भेज देते हैं। क्योंकि वह परोक्ष भक्ति कहलाती है। परोक्ष अर्थात् वे खुद स्वीकार नहीं करते, जिसका हो उसे भेज देते हैं। इसलिए अंदरवाले भगवान की भजना करो।

प्रार्थना से सुधरते हैं भावकर्म और कर्म का *भोगवटा*

प्रश्नकर्ता : दादा, मैं प्रश्न ऐसा पूछ रहा था कि जो प्रारब्ध बन चुका है, किसी को बीमार पड़ना है या किसी को कुछ नुकसान होना है, तो क्या प्रार्थना से वह बदल सकता हैं?

दादाश्री : ऐसा है न, प्रारब्ध के विभाग होते हैं। प्रारब्ध के प्रकार होते हैं। एक प्रकार ऐसा होता है कि वह प्रार्थना करने से खत्म हो जाता है। दूसरा प्रकार ऐसा है कि आप साधारण पुरुषार्थ करो तो खत्म हो जाता है। और तीसरा प्रकार ऐसा है कि आप चाहे जितना पुरुषार्थ करो, लेकिन भुगते बिना चारा नहीं रहता। बहुत गाढ़ होता है। जैसे किसी व्यक्ति ने अपने कपड़ों पर थूका और उसे धोने जाएँ तब अगर वह हल्का होगा तो पानी डालने से धुल जाएगा। अगर बहुत गाढ़ हो तो?

प्रश्नकर्ता : नहीं निकलता।

दादाश्री : उसी प्रकार जो कर्म गाढ़ होते हैं, उन्हें निकाचित कर्म कहा है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कर्म अगर बहुत गाढ़ हों तो प्रार्थना से भी कोई फर्क नहीं पड़ता?

दादाश्री : कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन प्रार्थना से उस घड़ी सुख लगता है। पुराना कर्म तो, प्रारब्ध हम जो, 'आइए, पधारिए' कहते हैं। लेकिन जो नया पुरुषार्थ करते हो, कॉज़ेज़, कि 'अभी कहाँ से आए।' वह जो आपने किया वह उल्टा कर दिया। लेकिन अभी भी आपके हाथ में सत्ता है। वहाँ उसे बदल दो, भगवान का नाम लेकर।

दुःख मिट जाए ऐसी प्रार्थना के संस्कार

प्रश्नकर्ता : एक तो शांति से भुगत रहा होता है, वहाँ फिर अन्य कोई आए और सयाना बनकर कहे, 'अरे! क्या हुआ, क्या हुआ? उससे कुछ होनेवाला तो है नहीं।'

दादाश्री : ये जो हमसे मिलने आते हैं न, वह हमारे बहुत उच्च संस्कार के नियम के आधार पर आते हैं। मिलने जाना यानी क्या? कि वहाँ जाकर, 'कैसे हो भाई?' अब आपको कैसा लग रहा है?' तब वह कहेगा, 'ठीक है।' उसके मन में लगेगा कि 'ओहोहो! मेरी इतनी वैल्यू, इतने लोग मुझे देखने आ रहे हैं!' और उससे वह दुःख भूल जाता है। अब नियम ऐसा था, कि मिलने जानेवाले व्यक्ति को हमेशा भगवान से प्रार्थना करनी है कि, 'भगवान, उसे जल्दी ठीक हो जाए।' ऐसी प्रार्थना करनी है, अपने यहाँ ऐसे संस्कार थे।

प्रश्नकर्ता : प्रार्थना करने से भुगतने की शक्ति मिलती है?

दादाश्री : नहीं, आपको जो दु:ख आया है न, प्रार्थना के कारण दु:ख में सुख का भाग लगाना है। लेकिन प्रार्थना रह सके, वह मुश्किल है। संयोग खराब हों और मन जब बिगड़ा हुआ हो, उस घड़ी प्रार्थना मुश्किल है। उस घड़ी रहे तो बहुत उत्तम कहलाएगा। तब दादा भगवान जैसे को याद करके बुलवाओ कि जो खुद शरीर में नहीं रहते हैं, शरीर के मालिक नहीं हैं, उन्हें यदि याद करके बुलाएँगे तो वह रहेगा, नहीं तो नहीं रहेगा।

प्रश्नकर्ता : वर्ना उन संयोगों में प्रार्थना याद ही नहीं आएगी?

दादाश्री : याद ही नहीं आएगी। याद को गायब ही कर देती है, भान ही गायब हो जाता है सारा।

प्रार्थना, सिर्फ निमित्त के तौर पर

प्रश्नकर्ता : कोई बीमार हो, उसके लिए हम प्रार्थना करते हैं कि 'ठीक हो जाए।' और फिर जब वह ठीक हो जाता है तब कहते हैं कि 'मैंने प्रार्थना की इसलिए वह ठीक हो गया।'

दादाश्री : वह तो निमित्त कहलाता है, कर्ता नहीं है खुद। इसलिए उसे खुद ऐसा इगोइज़म नहीं करना चाहिए कि 'मैंने प्रार्थना की इसीलिए तू जीवित है।' वह तो सिर्फ निमित्त है। अगर वह डॉक्टर के हाथों मर जाए, तो डॉक्टर ने नहीं मारा है। और डॉक्टर के हाथों बच जाए तो फिर डॉक्टर क्या कहता है? देखा मैंने बचाया न! बड़ा आया बचानेवाला! तो फिर कल तेरी मामी क्यों मर गई? और बाप को मरने दिया! इतने लोगों को मरने दिया और फिर यहाँ बचानेवाला!

प्रार्थना सच्चे हृदय से की जाए, तो पहुँचती है

प्रश्नकर्ता : कहीं भी भूकंप आए या हुल्लड़ हो जाए, प्राकृतिक आपदा आ जाए तब अगर हम यहाँ बैठे-बैठे ऐसी प्रार्थना करें कि 'हे भगवान! वहाँ शांति रहे और सभी को हेल्प (मदद) मिले ऐसा कीजिए, तो वह पहुँचती है या सिर्फ यों ही गप्प है?

दादाश्री : नहीं। वह पहुँचती है। पहुँचती है और अगर ऐसी भावना करें कि ये लोग दु:खी हो जाए तो वह भी पहुँचती है। दिल सच्चा हो तो पहुँचती है। उसमें अंदर सत्यता, अंदर साफ है या नहीं इस पर आधार रखता है।

प्रश्नकर्ता : अगर सच्ची, अंदर से संपूर्ण अंत:करणपूर्वक प्रार्थना हो, तो अगर कोई बीमार हो तो उसके परिणाम पर असर होता है?

दादाश्री : फलित होती है न, लेकिन उतना प्योरिटी हो तो फलित होती है। मुख्य सवाल शुद्धता का, हार्ट का साफ होना, वह तो बहुत उच्च बात है। हार्ट साफ, 'प्योर हार्ट।' हार्ट बिल्कुल 'प्योर' होना, वह तो भगवान कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : थोड़ा स्वार्थ मिला हुआ हो, ऐसा सब हो इसलिए अशुद्धि आती है।

दादाश्री : ऐसा तो बहुत मैल भरा हुआ है उसमें।

भगवान से की गई प्रार्थना, नियम को एक तरफ कर देती है

प्रश्नकर्ता : कर्म के सिद्धांत जो तय है, कर्म का परिणाम जो तय है उसमें, सच्ची प्रार्थना कितने हद तक असर कर सकती है? कितने बदलाव ला सकती है?

दादाश्री : वह तो प्रार्थना में हार्ट जितना साफ, उसी अनुपात में।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या उससे असर होता है?

दादाश्री : असर होता है न, अवश्य असर होता है।

प्रश्नकर्ता : उसका कर्म बदल जाता है? तो नियति बदल जाती है?

दादाश्री : अभी गरमी का मौसम हो तो भी बारिश ला देती है।

प्रश्नकर्ता : यह तो कोई कर्म के बंधन से बंधा हुआ हो, तो उसे हम मुक्ति किस तरह दिलवा सकते हैं?

दादाश्री : जितनी अंदर की शुद्धता है, असर उतना ही होता है न!

प्रश्नकर्ता : हमें किसी भी तरह का दर्द हो या कुछ भी भुगत रहे हो, यानी कि कर्म का जो कुछ भी फल भुगत रहे हो, तो यदि हम उसके लिए सच्चे हृदय से प्रार्थना करें तो क्या उसका फल उसे मिलता है? बदल सकते हैं?

दादाश्री : भगवान के प्रति प्रार्थना है न! वह सभी नियमों को एक तरफ रख देती है, नियति के नियम को दूर रख देती है।

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन वह प्रार्थना किस तरह की होनी चाहिए? क्या तन-मन और धन से होनी चाहिए?

दादाश्री : हाँ, प्यॉरिटी। तन-मन-धन की प्यॉरिटी हो तभी। तन-मन-धन की (प्यॉरिटी) चाहिए। अभी प्यॉरिटी ही नहीं है उसी का ही यह सब दु:ख है न!

समझे बिना, लेकिन ज्ञानी कहें सो करो

प्रश्नकर्ता : प्रार्थना में तो हम रोज़ (सब) बोलते हैं लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आता। वह समझा दीजिए?

दादाश्री : कोई हर्ज नहीं। लेकिन समझ में नहीं आए तब भी बोलते रहना न! आपको उसका परिणाम मिलेगा। व्यापार के बारे में ज़्यादा कुछ पता नहीं चले लेकिन आप डीलिंग करते हो इसलिए परिणाम आएगा। यह ऐसा नहीं है कि सब समझ में आ जाए। ज़्यादा गहराई में नहीं जाना है। ज़्यादा गहराई में उतरने के बजाय सतह पर रहना है। ज्ञानीपुरुष कहते हैं कि इतना हितकारी है उतना करना।

जिसमें प्रीति, उसमें चित्त की स्थिरता

प्रश्नकर्ता : जब हम भगवान से प्रार्थना करने बैठते हैं तब, चाहे कितने भी प्रयत्न करें फिर भी हमारा मन उसी समय भटकने निकलता है।

दादाश्री : ऐसा है न, मन को, चित्त को, जहाँ पर प्रेम हो न, वहाँ स्थिर रहता है। प्रेम ही नहीं हो तो स्थिर कैसे रहेगा? अभी अगर बैंक में जाए, तो डॉलर में पूरे दिन स्थिर रहता है और भगवान में स्थिर नहीं रहता। भगवान से लोगों को प्रेम ही नहीं है। लोगों को स्त्रियो पर प्रेम है और डॉलर पर प्रेम है। दो जगहों पर प्रेम है। स्त्रियों पर भी कुछ देर के लिए ही। डॉलर (लक्ष्मी) पर पूरे दिन प्रेम रहता है, अत: वहाँ पर आराम से स्थिर रहता है। बैंक में रहता है या नहीं रहता? बैंक में दस हज़ार डॉलर, रुपए छुट्टे दिए हों तो गिनने में स्थिर रहता है या नहीं रहता?

प्रश्नकर्ता : वह तो कुछ ही देर के लिए न?

दादाश्री : नहीं, अंत तक। दस हज़ार गिनने तक रहता है। बीच में बेटा आ जाए फिर भी देखता तक नहीं, सही बात है या गलत बात?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल सही बात।

दादाश्री : यह तो उसकी डॉलर पर प्रीति है। भगवान पर बिल्कुल भी प्रीति नहीं है लोगों को। अगर एक ही दिन भी भगवान पर प्रीति आए न,

तो आपको सभी चीज़ें मिल जाएँ। इस दुनिया में कोई चीज़ ऐसी नहीं है कि जो उसे न मिल सके, लेकिन भगवान पर प्रीति नहीं है।

प्रश्नकर्ता : भगवान पर प्रीति आए, उसके लिए क्या करना चाहिए, दादा?

दादाश्री : उसे जानना चाहिए कि भगवान से मुझे क्या फायदा मिलेगा? जैसे कि, डॉलर से फायदा मिलता है न, लोग वह जानते हैं, उसी तरह, इससे क्या फायदा मिलेगा, वह सब जानना चाहिए।

सच्ची प्रार्थना एकाग्रता सहित

प्रश्नकर्ता : एकाग्रता लाने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : अगर एकाग्रता न आए तो उसे प्रार्थना कह ही नहीं सकते। नाम जाप-यज्ञ करने से अगर एकाग्रता न आती हो तो उसे नाम जाप कह ही नहीं सकते। थोड़ा ज़ोर से बोलना चाहिए। ज़ोर से 'राम, राम' बोलेगा तो भी चलेगा 'मरा, मरा' बोलो तो भी चलेगा, खूँटी-खूँटी बोलो तो भी चलेगा। लेकिन ज़ोर से बोलने से एकाग्रता आ जाती है। 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार' बोलो देखते हैं। वह कीर्तन करते हैं। जो भगवान हैं उनका कीर्तन करते हैं। नक़द, दिस इज दी केश बैंक। जो माँगेगे वह मिलेगा।

उत्तम, मौन प्रार्थना

प्रश्नकर्ता : मौन प्रार्थना करना अच्छा है या भजन करना अच्छा है?

दादाश्री : मौन प्रार्थना करना अच्छा है। ज़्यादा परेशानी हो, ज़्यादा अशांति हो तो भजन अच्छा है। बहुत ज़्यादा अशांति हो जाए तब ज़ोर से भजन गाते रहने से अंदर शांत हो जाता है। और अगर अन्य किसी कारण के लिए चाहिए तो मौन प्रार्थना जैसी तो कोई चीज़ ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हम भगवान के जो भजन करते हैं, उसे प्रार्थना कह सकते हैं या नहीं?

दादाश्री : प्रार्थना नहीं कह सकते।

प्रश्नकर्ता : तो क्या कहते हैं उसे? भजन करने से अध्यात्म नहीं मिल सकता?

दादाश्री : आप जो करोगे न, जिसका भजन करोगे, उसी जैसे बनते जाओगे। भगवान, भगवान, भगवान, करोगे तो वैसे बनते जाओगे।

प्रश्नकर्ता : जिसका भजन करते हैं, वे वैसे बनते ही जाते हैं और प्रार्थना में भी वैसा ही है न, प्रार्थना करने से क्या होता है?

दादाश्री : वह तो, जब कोई परेशानी में पड़ जाएँ तब, भगवान से 'हे भगवान!' तब वह प्रार्थना काम आती है।

प्रार्थना की रीत में कुदरती डेवेलपमेन्ट

प्रश्नकर्ता : अपने मंदिरों में, जिनालयों (जैन मंदिर) में जो भजन होते हैं, प्रार्थनाएँ होती हैं वे बहुत ऊँची आवाज़ से बोली जाती हैं और ऊँचे स्वर से प्रार्थना की जाती है। जबकि इन क्रिश्चियनों के जो चर्च हैं, उनमें या रामकृष्ण मिशन जैसे जो मिशन हैं, वहाँ बहुत ही शांति से बैठकर प्रार्थना की जाती है, तो इन दोनों में अच्छा कौन सा है? और कौन सा उपयोगी है? और ऐसा क्यों है?

दादाश्री : अगर हम लोग क्रिश्चियनों की तरह करने जाएँगे न तो हमारा बेकार जाएगा। हम लोग अगर ऐसे एकाग्र, ऐसे शांत चित्त से करेंगे तो हमारा काम नहीं होगा। क्रिश्चियन जो कर रहे हैं, उनके लिए वह करेक्ट है और मुस्लिम जो अज़ान देते हैं, वह भी उनके लिए करेक्ट है।

प्रश्नकर्ता : दादा, इसका कारण समझाना पड़ेगा न?

दादाश्री : वैज्ञानिक कारण है। पूरा विज्ञान ही है यह तो। यह डेवेलपमेन्ट का विज्ञान है। इसलिए क्रिश्चियनों को तो, अपने आप धीरे-धीरे, शांति से बस वही करना है। उनकी ज़रूरत उतनी ही हैं, उन्हें और कुछ नहीं करना है। वह तो बहुत सुंदर तरीका है वह और कुदरती तौर पर हो गया है। यह तो ऐसा कहते हैं कि यह तरीका पोप ने दिया है या क्राइस्ट ने दिया है। क्राइस्ट भी कुदरत का निमित्त ही हैं न?

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब हम सब भी कुदरत के खिलौने हैं।

दादाश्री : देह मात्र कुदरत का खिलौना ही है न। ये सब कुदरत का प्रबंध है और उनके लिए वह फिट ही है।

जब तक भीख है, तब तक दुआ नहीं पहुँचती

प्रश्नकर्ता : मन में निश्चित किया होता हो कि यह कार्य करना है और वह सफल नहीं हो रहा हो, फिर भी अगर अंदर जो विलपावर (संकल्प शक्ति) है कि यह कार्य सफल होगा ही, तो क्या वह ठीक है?

दादाश्री : हाँ, वह ठीक है। क्योंकि यदि विलपावर होगी, तो वह काम होगा ही। और विलपावर टूट गई तो वह काम नहीं हो पाएगा। विलपावर पर से हम भविष्य बता सकते हैं कि यह काम होगा या नहीं होगा। अत: जिस काम के लिए विलपावर नहीं हो, तो वह काम छोड़ देना चाहिए और विलपावर हो, तो उस काम को पकड़कर रखना चाहिए। वह काम कभी न कभी होगा ही! आपकी भावना और साथ में दुआ भी चाहिए, दोनों साथ में होंगे तो काम होगा।

प्रश्नकर्ता : दुआ विलपावर से आगे निकल जाती है?

दादाश्री : हाँ, लेकिन दोनों साथ में होने चाहिए। विलपावर नहीं होगी, तो दुआ कुछ भी काम नहीं करेगी। आपकी विलपावर और 'यह' दुआ, दोनों मिल जाएँ, तो काम सफल होगा। किसकी दुआ अधिक पहुँचती है? कि जिसे इस जगत् की कोई भी चीज़ नहीं चाहिए, किसी भी चीज़ की भीख नहीं हो, जिसे लक्ष्मी की भीख नहीं हो, विषय की भीख नहीं हो, मान की भीख नहीं हो, कीर्ति की भीख नहीं हो, तब उनकी दुआ पहुँचती है। जब तक मान की भीख है, लक्ष्मी की भीख है तब तक दुआ नहीं पहुँचती।

सच्ची दुआ, वही भगवान है

भगवान क्या कहते हैं? तुझे दवाई भी चाहिए और दुआ के बगैर भी नहीं चलेगा। दवाई तो निमित्त है लेकिन दुआ तो चाहिए ही। शायद कभी दवाई का निमित्त न भी मिले, तो दुआ होगी तो चलेगा। अत: दुआ ही भगवान है।

अब, तकलीफ में, बुद्धिशाली तो ऐसा ही कहेंगे कि इससे क्या फायदा होगा? अरे भाई, तू बेवजह क्यों शंका कर रहा है? शंका ही रुकावट है। फिर अगर कभी उसका उदय ज़्यादा खराब हो, तो शायद न भी हो।

आपका ही आपको वापस मिलता है

प्रश्नकर्ता : ये कह रहे हैं कि काफी चीज़ें प्रार्थना से प्राप्त कर सकते हैं। खुद ने जो-जो प्राप्त किया, उन सभी का वर्णन कर रहे हैं। तो उन्हें समझना है कि यह प्रार्थना क्या है? किस तरह कर सकते हैं और कौन सी प्रार्थना करनी चाहिए?

दादाश्री : जला हुआ व्यक्ति, यह दवाई लगाने के लिए प्रार्थना करता है। वह बोलकर प्रार्थना करता है या मन में प्रार्थना करता है तब अगर कोई दवाई लाकर उसे दे-दे, तो वह समझता है कि

'भगवान ने मेरी प्रार्थना सुन ली।' प्रभु ऐसी प्रार्थना सुनने के लिए फालतू नहीं हैं। यह तो आप ही का शब्द कार्यकारी बनकर वापस आता है। वह (जो) शब्द कारण स्वरूप में था और कार्यकारी बनकर वह वापस आता है। हाँ, बस उसमें भगवान दखल नहीं करते। वह तो इस जगत् के लोगों के लिए ठीक है, लौकिक बातें। उसमें ऐसा कुछ भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादा, कुछ समय पहले अपने यहाँ प्रार्थना के अर्थ के बारे में चर्चा हुई थी कि भान भूले हुए हम बारबार राह पर आकर अहम् केन्द्र का त्याग करें, उसे प्रार्थना कहते हैं।

दादाश्री : वह ठीक है। लेकिन मेरा कहना यह है कि, मूल प्रार्थना की चीज़ अपनी है, वह (अपना ही) प्रोजेक्ट है। वह और कुछ भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यानी वह प्रोजेक्ट करने की ज़रूरत नहीं है।

दादाश्री : नहीं, अपने आप ही, ठंड लगने पर प्रोजेक्ट करता ही है। ज़रूरत हो या न हो, लेकिन करता ही है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है, उसका प्रतिकार करने की ज़रूरत नहीं है।

दादाश्री : प्रतिकार करने की ज़रूरत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर भी प्रार्थना के लिए प्रभु, ज्ञानी या गुरु किसी भी माध्यम की ज़रूरत तो है न?

दादाश्री : ठीक है, यह माध्यम तो लोग रखते हैं। मन में मानते हैं कि, मैंने भगवान से प्रार्थना की। कोई बाप भी नहीं सुनता वहाँ पर। वह तो उसके मन में श्रद्धा है, वह श्रद्धा फल देती है। जो कारण है वह कार्यरुपी होकर वापस आता है और वह भी अगर अंदर पुण्य हो तो, वर्ना पानी-पानी करते हुए मर जाना पड़ता है।

प्रार्थना बहुत उच्च साधन

प्रश्नकर्ता : दादा, मैंने प्रार्थना का अर्थ ऐसा समझा था कि भान भूले हुए, हम बारबार इधर-उधर भटकते हैं, तो ठीक तरह से (व्यवस्थित) राह पर आ जाएँ। तो प्रार्थना ही एक ऐसा बल है कि जो अपने भूले हुए भान को सही जगह पर रखता है।

दादाश्री : वह सब तो व्यवहारिक चीज़ों के लिए। व्यवहारिक चीज़ों के लिए प्रार्थना करें न, तो वह फिर राह पर आ जाता है। लेकिन प्रार्थना बहुत आगे ले जाती है और आपका यह अर्थ ठीक है कि प्रार्थना यानी चारों तरफ से इसका सबकुछ एकाग्र कर देती है।

प्रश्नकर्ता : रास्ता भूल जाना मनुष्य का स्वभाव है। उस भूले हुए रास्ते को फिर से ठिकाने पर लाने के लिए प्रार्थना एक महत्वपूर्ण साधन है।

दादाश्री : प्रार्थना तो बहुत उच्च साधन है। अंत में आत्मा क्या कहता है कि तू अपने आप, तुझे जब तक जो करना है तब तक कर और तुझे ठीक लगे, तब तक संसार खड़ा करता रह और अगर ठीक नहीं लगता है तो मुझसे प्रार्थना करना कि मुझे आपके साथ ले लीजिए, अभेद बना दीजिए। तो वह सब से बड़ी प्रार्थना कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। जाप-यज्ञ वह भी तो एक भावना ही है न, हम जैसी भावना करेंगे वैसा फल मिलेगा।

दादाश्री : हाँ, फल मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : हम रोज़ शुद्धात्मा की भावना करते हैं, तो हम शुद्धात्मा में ही रहने लगेंगे ऐसा तो होगा ही न?

दादाश्री : हाँ, ठीक है। अर्थात् प्रार्थना तो बहुत काम करती है।

प्रार्थना किसे कहेंगे?

प्रश्नकर्ता : प्रार्थना किसे कहेंगे वह भी समझना चाहिए न?

दादाश्री : दो प्रकार की प्रार्थनाएँ हैं। एक है सांसारिक अर्थ। वह सांसारिक अर्थ फल नहीं देता और एक है परमार्थ का अर्थ, सिर्फ वह परमार्थ का अर्थ ही फल देता है, बाकी सांसारिक अर्थ फलित नहीं होता। सिर्फ अगर धर्म से संबंधित या आत्मा से संबंधित प्रार्थना की जाए तो वही फलित होती हैं।

प्रार्थना यानी हमें इन सभी सांसारिक चीज़ों से आगे अध्यात्म में आगे बढ़ने की जो भावना होती है न, वह प्रार्थना बहुत कीमती चीज़ है। हालाँकि अगर सच्ची प्रार्थना की जाए न, तो उसे जवाब मिलता है और उस प्रार्थना के अनुसार फल मिलता है। लेकिन प्रार्थना एकाग्रतापूर्वक और ध्येयपूर्वक, मानसी पूजा (मानसिक उपचार द्वारा मनोमय- भगवान की पूजा करना वह) की तरह करनी चाहिए।

अध्यात्म ही प्रार्थना है

प्रश्नकर्ता : प्रार्थना का मूल कारण तो अध्यात्म ही है न? उसके पीछे अध्यात्म ही रहा हुआ है न? हम जो भगवान से प्रार्थना करते हैं वह कुछ माँगने के लिए करें, तो अलग बात है।

दादाश्री : वह अर्थना है, वह सांसारिक है, वह भौतिक है जबकि प्रार्थना आध्यात्मिक है। अध्यात्म के लिए याचना करना वह प्रार्थना कहलाती है। फिर चाहे वह भगवान की करो या अन्य किसी ज्ञानी की करो या चाहे किसी की भी करो लेकिन प्रार्थना आध्यात्मिक है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह ठीक है लेकिन हम भगवान का जो भजन करते हैं, उसे प्रार्थना कह सकते हैं या नहीं?

दादाश्री : प्रार्थना नहीं कह सकते...

प्रश्नकर्ता : तो क्या कहेंगे उसे? भजन करने से क्या अध्यात्म मार्ग, अध्यात्म नहीं मिल सकता?

दादाश्री : भगवान बनता जाता है, जो कुछ भी आप करते हो न, जिसका भजन करते हो उसी रूप होते जाते हों और यदि ऐसा कहे 'मेरी वाइफ बुरी है, बुरी है' तो वैसा ही होता जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह ठीक है।

दादाश्री : यदि भगवान, भगवान, भगवान करो तो वैसे ही होते जाओगे।

प्रश्नकर्ता : जैसा भजन करता है, उसी जैसा बनता जाता है। और प्रार्थना में भी ऐसा ही है न और प्रार्थना करने से क्या होता है?

दादाश्री : वह तो जब मुश्किल में फँस जाए तब, भगवान से, 'हे भगवान!' तब वह प्रार्थना....

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुश्किल आ जाए, तब मुश्किल से निकलने के लिए प्रार्थना करते हैं न?

दादाश्री : और नहीं तो क्या फिर?

प्रश्नकर्ता : तो आपने कहा कि प्रार्थना ही अध्यात्म है।

दादाश्री : हाँ, वही अध्यात्म कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : वही अध्यात्म!

दादाश्री : हाँ, अध्यात्म में भी ऐसी काफी चीज़ें हैं। सत्यार्थ की कामना को प्रार्थना कहते हैं? सत्यार्थ क्या होता है? तो, आत्मा शुद्धात्मा या मोक्ष जो मानो, वह।

हृदय शुद्धि तो प्रार्थना सच्ची

प्रश्नकर्ता : जगत् में प्रार्थना करते हैं, उसका फल तो आता है न?

दादाश्री : प्रार्थना सच्ची होनी चाहिए, वैसा कोई ही होता है।

प्रश्नकर्ता : 100 में एक होता है न?

दादाश्री : होता है, कोई हृदय शुद्धिवाला हो उसकी प्रार्थना सच्ची होती है! लेकिन प्रार्थना करते समय चित्त दूसरी जगह पर हो, तो वह सच्ची प्रार्थना नहीं कहलाती।

प्रश्नकर्ता : प्रार्थना करें तो किसके लिए और किस तरह करें?

दादाश्री : प्रार्थना अर्थात्, स्वयं खुद की खोज करता है। भगवान खुद के भीतर ही बैठे हैं, लेकिन उनसे पहचान नहीं हुई है इसलिए मंदिर में या जिनालय में जाकर दर्शन करते हैं, वह परोक्ष दर्शन है।

प्रार्थना होनी चाहिए हृदयपूर्वक

प्रश्नकर्ता : मुझे यह समझना है कि प्रार्थना किस तरह करनी चाहिए?

दादाश्री : प्रार्थना हृदय से होनी चाहिए। हृदयपूर्वक भगवान से प्रार्थना करनी है, अंतिम प्रार्थना। और दूसरा अगर संसार में हमें बहुत दु:ख हो, तो संसार में भी किसी से प्रार्थना कर सकते हैं, लेकिन प्रार्थना भगवान से होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कैसे करनी चाहिए?

दादाश्री : हृदयपूर्वक होनी चाहिए। कितने लोगों की आँसूओं सहित हृदयपूर्वक होती है, तब जाकर वह वहाँ पहुँचती है और उसका फल मिलता है।

हेतु सहित प्रार्थना फलित होती है

प्रार्थना हेतुपूर्वक होनी चाहिए, कुछ भी हेतु होना चाहिए, यों ही प्रार्थना करने का कोई अर्थ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादा क्या यों ही प्रार्थना की जा सकती है?

दादाश्री : उसका मतलब ही नहीं है न, मीनिंगलेस। प्रार्थना यानी फोन करना। तो वह सामने से पूछेगा न कि 'भाई, फोन क्यों कर रहा है, तू मुझे कुछ बता तो सही! मोक्ष में जाने के लिए भी प्रार्थना करनी पड़ती है और संसारी चीज़ के लिए भी प्रार्थना करनी पड़ती है।

प्रश्नकर्ता : उन्हें ऐसा लगता है कि मेरा यह पूरा जीवन परमात्मा की इच्छानुसार ही है तो फिर परमात्मा की इच्छा के विरूद्ध मैं कोई प्रार्थना कर सकता हूँ?

दादाश्री : परमात्मा को इच्छा ही नहीं होती। अगर परमात्मा को इच्छा हो, तो फिर वे भिखारी कहलाएँगे। इच्छाएँ सारी आपकी। भौतिक सुखों की इच्छा है वह सारी आपकी। परमात्मा को इच्छा नहीं होती, वे तो इच्छा राग-द्वेष से रहित हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, तो प्रार्थना कैसे करनी चाहिए? तो प्रार्थना पपर्ज़ (हेतु) के बिना तो हो नहीं सकती, यों ही। तो फिर प्रार्थना करने की ज़रूरत है या नहीं?

दादाश्री : काम न हो तो ज़रूरत नहीं है। अगर यहाँ आप किसी से विनती करो कि 'साहब, मैं आपसे विनती करने आया हूँ,' तब वह पूछेगा, 'क्या काम है?' ऐसा पूछेगा या नहीं पूछेगा? वैसे ही, मैं प्रार्थना कर रहा हूँ, तो 'क्या काम है, बता दे न भाई। वर्ना मुझे नींद से क्यों जगाया?' कहेगा। बिना हेतु के प्रार्थना नहीं की जा सकती।

प्रश्नकर्ता : कोई हेतु न हो तो?

दादाश्री : हेतु रहित प्रार्थना सुनेगा कौन? या तो भौतिक हेतु हो या फिर उसकी मुक्ति का हेतु, लेकिन कोई हेतु होना चाहिए। प्रार्थना कौन

करता है? जिसे कोई भी दु:ख हो वह प्रार्थना करता है। बिना दु:खवाला कोई भी व्यक्ति प्रार्थना नहीं करता। समझ में आया मैं क्या कहना चाहता हूँ?

प्रश्नकर्ता : यानी प्रार्थना करनी चाहिए, ऐसा आग्रह होना चाहिए?

दादाश्री : नहीं, नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं है। अगर आपको शांति चाहिए तो करनी है। कुछ भौतिक सुख की ज़रूरत हो तो करनी है। वर्ना अगर मुक्ति प्राप्त करनी हो, मोक्ष में जाना हो तो करनी है। अगर कोई एप्लिकेशन (अरज़ी) दे, और उसमें लिखे कि 'साहब, मैं तो सिर्फ एप्लिकेशन करने के लिए ही एप्लिकेशन कर रहा हूँ,' तब सामनेवाला क्या कहेगा? कहेगा 'हेडेक (सरदर्द) है।' हमेशा प्रार्थना हेतुपूर्वक होती है। अब आपकी समझ में आई बात?

प्रश्नकर्ता : जब हम प्रार्थना करें तब भगवान से याचना क्यों करे? भगवान को अपने आप पता ही होता है। हम योग्य हैं तो वे अपने आप ही देंगे न? लेकिन ऐसे याचना क्यों करे?

दादाश्री : अपने यहाँ कहावत है न, 'माँगे बिना तो माँ भी नहीं परोसती।' माँ को कैसे पता चलेगा कि इसे यह सब्ज़ी चाहिए? जब वह कहता है, 'आलू की सब्ज़ी दो' तब वह देती है। उसी तरह भगवान से प्रार्थना करनी पड़ती है। वह व्यवहार रखना पड़ता है।

आवरण खत्म होते हैं प्रार्थना द्वारा

भगवान को इतना ही अधिकार है कि आप जब भगवान से प्रार्थना करते हो, तो उस समय आपको शांति होगी, अंदर आवरण टूटेंगे और प्रकाश होगा। भगवान भी बाकी (और) कुछ नहीं कर सकते। कोई कुँवारा हो और वह कहे कि 'भगवान तू मेरी किसी औरत से शादी करवा दे।' तब भगवान शादी नहीं करवाते। किसी देवता का पूतला जागृत हो जाए, किसी संत की पूजा करे तो शायद कभी हो जाता है, उनके आशीर्वाद से, लेकिन भगवान का तो आशीर्वाद होता ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : भगवान को रहीम, करीम, दयालु, मायालु ऐसा कहते हैं तो वह किस हिसाब से?

दादाश्री : हाँ, वे रहीम ही हैं लेकिन उनसे प्रार्थना करेंगे तभी। जब प्रार्थना करते हैं न, तो उस घड़ी आनंद आता है। उन्हें गालियाँ दो न, तब वे डाँटते नहीं हैं। प्रार्थना करने से फल देते हैं।

प्रतिक्रमण, अंतराय के

प्रश्नकर्ता : मेरे तो बहुत अंतराय हैं। किताब लेकर पढ़ने बैठूँ तो नींद आने लगती है।

दादाश्री : सारे अंतराय कर्म लेकर आए हैं न, लेकिन हमें रोज़ उसके लिए प्रतिक्रमण करना है कि 'हे भगवान मेरे अंतराय कर्म दूर कीजिए, अब मेरी इच्छा नहीं है। पहले कोई भूल की होगी, जिससे ऐसे अंतराय आए हैं, लेकिन अब भूल नहीं करनी है। इस तरह रोज़ भगवान से प्रार्थना करना।

प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना हो, तो स्विकृत हो

भगवान तो क्या देखते हैं? आत्मबुद्धि से (के उपयोग से) क्या-क्या इच्छाएँ हैं? आत्मबुद्धि से कुछ रहना चाहिए। लोग तो भगवान के सामने प्रतिज्ञा लेते हैं। प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना हो, तो भगवान स्वीकार करते हैं। दादा के सामने प्रतिज्ञा की हो कि 'यह अभिप्राय कभी नहीं बदलूँगा। मुझे मोक्ष में जाना है। इस अभिप्राय को दोबारा कभी नहीं बदलूँगा, ऐसा निश्चय करता हूँ, प्रतिज्ञा करता हूँ। प्रतिज्ञा और प्रार्थना, साथ में होनी चाहिए। लेकिन प्रतिज्ञा के साथमें प्रार्थना होनी चाहिए कि 'यह प्रतिज्ञा है उसके लिए प्रार्थना करता हूँ।'

प्रार्थना होनी चाहिए अविरोधाभासी भाव से

प्रश्नकर्ता : अपने देश में तो बारिश नहीं हो रही हो तो प्रार्थना करते हैं तो फिर बारिश आती है, वह क्या है, समझाइए?

दादाश्री : हाँ, ऐसा है न प्रार्थना वह निमित्त है उसमें। अच्छा निमित्त हो और प्रार्थना करे तो बरसता भी है।

ये तो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स हैं। आपको भावना करनी चाहिए कि टाइम हो गया है। आप आओ तो अच्छा है। उतनी भावना करनी चाहिए। लेकिन अपने लोगों की भावना कैसी विरोधाभासी होती है, वह आपको समझाता हूँ। खुद के खेत होते हैं न इसलिए पूरे दिन गाता रहता है 'बारिश आए तो अच्छा, बारिश आए तो अच्छा, हे भगवान, बारिश आए तो अच्छा।' फिर बाहर जाए न, और बिना छतरी लिए गया और बारिश आने लगे तो कहेगा, 'अभी रुक जाए तो अच्छा।' अब इन लोगों को क्या कहना? फिर बारिश कहेगी, 'मैं क्या करूँ! जो लोग माँगते हैं, वे ही ऐसा कहते हैं।'

और ये क्रोन्ट्रेक्टर भी कहते हैं, 'मेरी सिमेन्ट बाहर रखी है, अभी मत आना।' फिर धोबी भी कहते हैं, 'मैंने कपड़े धोकर सुखाए हैं, मत आना,' तब बारिश कहेगी तो 'मैं करूँ क्या?' यों बारिश पब्लिक के अधीन है। ये पब्लिक कोई ऐसी-वैसी नहीं है। पब्लिक में भगवान हैं। इसलिए अपने अधीन ही है यह सब। अन्य कोई *ऊपरी* (बॉस) नहीं है इसमें।

सत्य का आग्रह वह पोइज़न

प्रश्नकर्ता : कोई है, वह केवल सत्य के रास्ते पर चलता है और दूसरा है वह प्रार्थना करता है, तो दोनों में से कौन सही है? दोनों में से किसे भगवान जल्दी मिलेंगे?

दादाश्री : जो प्रार्थना करता है, उसे।

प्रश्नकर्ता : 'सत्य ही ईश्वर है' ऐसा कहा जाता है न?

दादाश्री : यह सत्य ईश्वर नहीं है। यह सत्य तो बदल जाए ऐसा है। यह आप मानते हो कि 'मैं चंदूभाई हूँ' वह गलत ही है न? यह सत्य विनाशी है, यह खरा सत् नहीं है। खरा सत् तो जो अविनाशी है, वही सत् है। वही सत्-चित्त आनंद स्वरूप है।

इस जगत् का सत्य कैसा है? आप ऐसा कहो कि, 'इस व्यक्ति को मैंने पैसे दिए हैं, वह लुच्चा है, वापस नहीं दे रहा।' तब दूसरा व्यक्ति आपसे कहेगा कि, 'किचकिच किसलिए कर रहे हो? घर जाकर खा-पीकर चुपचाप सो जा न शांति से! कलह किसलिए कर रहे हो?' आप उसे कहो कि, 'कलह करना चाहिए। मेरा सत्य है।' तो आप सब से बड़े गुनहगार हो। सत्य कैसा होना चाहिए? साधारण होना चाहिए। सत्य में नैतिकता होनी चाहिए। उसमें किसी को धोखा या नुकसान नहीं होता, लुच्चाई नहीं होती। चोरी नहीं होती। नैतिकता ही चाहिए, दूसरी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। ये सत्य को पकड़कर जो बैठे थे, वे अंत में समुद्र में गिरे हैं (हताश ही हुए हैं)!

सत्य का आग्रह करना, वह पोइज़न है और असत्य का आग्रह करना, वह भी पोइज़न है।

एडजस्टमेन्ट से स्थापित होती है शांति

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले को समझाने के लिए मैंने अपना पुरुषार्थ किया, फिर वह समझे या नहीं समझे, वह उसका पुरुषार्थ?

दादाश्री : इतनी ही आपकी ज़िम्मेदारी है कि आप उसे समझा सकते हो। फिर वह नहीं समझे, तो उसका उपाय नहीं है। फिर आपको इतना कहना है कि 'दादा भगवान! इनको सद्बुद्धि देना।' इतना

कहना पड़ता है। कुछ उसे ऊपर नहीं लटका सकते, गप्प नहीं है। यह 'दादा' के एडजस्टमेन्ट का विज्ञान है, आश्चर्यकारी एडजस्टमेन्ट है यह। और जहाँ 'एडजस्ट' नहीं हो पाए, वहाँ उसका स्वाद तो आता ही रहेगा न आपको? यह 'डिसएडजस्टमेन्ट' वही मूर्खता है। क्योंकि वह समझे कि मैं अपना स्वामित्व छोड़ूँगा नहीं, और मेरा ही *चलण* (वर्चस्व) रहना चाहिए। तो पूरी ज़िंदगी भूखा मरेगा और एक दिन 'पोइज़न' पड़ेगा थाली में। सहज चलता है, उसे चलने दो न! यह तो कलियुग है! वातावरण ही कैसा है? इसलिए बीवी कहे कि आप नालायक हो, तो कहना 'बहुत अच्छा।'

प्रश्नकर्ता : हमें बीवी 'नालायक' कहे, वह तो उकसाया हो ऐसा लगता है।

दादाश्री : तो फिर आपको क्या उपाय करना चाहिए? तो क्या आपको ऐसा दो बार कहना चाहिए कि तू नालायक है? उससे क्या आपकी नालायकी खत्म हो गई? आप पर मुहर लगी तो क्या आप दो बार मुहर लगाएँगे? फिर नाश्ता बिगड़ेगा, पूरा दिन बिगड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : 'एडजस्टमेन्ट' की बात है, उसके पीछे भाव क्या है? फिर कहाँ पहुँचना है?

दादाश्री : भाव शांति का है, शांति का हेतु है। अशांति पैदा नहीं करने की युक्ति है।

प्रश्नकर्ता : बच्चे टेढ़े चलें, तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : बच्चे टेढ़े रास्ते जाएँ, तब भी आपको उसे देखते रहना है और जानते रहना है। और मन में उसके लिए अच्छा भाव करना है और अंत में प्रार्थना का 'एडजस्टमेन्ट' लेना है। प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए कि इस पर कृपा कीजिए। और इसे 'रिलेटिव' समझकर बहुत गहराई में नहीं उतरना है!

वहाँ प्रतिक्रमण से वापस मुड़ो

प्रश्नकर्ता : जब बच्चों को कहने जैसा लगे तो हम डाँटते हैं, तब उसे दुःख भी हो जाता है तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : फिर आपको अंदर माफी माँग लेनी है। और ज़रूरत से ज़्यादा कह दिया हो और दुःख हो गया हो तो आपको कहना चाहिए कि माफी माँगता हूँ। ऐसा कहने जैसा नहीं हो तो अतिक्रमण किया इसलिए अंदर से प्रतिक्रमण करना है। आप तो 'शुद्धात्मा' हो, इसलिए आपको चंदूलाल से कहना है कि, 'प्रतिक्रमण करो।' आपको दोनों भाग अलग रखने हैं। आपको चुपचाप अंदर अपने आप से कहना है कि 'सामनेवाले को दुःख न हो' ऐसे कहना और फिर भी बच्चों को दुःख हो जाए तो चंदूभाई से कहना है कि, 'प्रतिक्रमण करो।'

घर में आरती व प्रार्थना सिंचन करे संस्कार

(आपको घर में) छोटे लड़के-लड़कियों (बच्चों) को समझाना चाहिए कि सुबह नहा-धोकर भगवान की पूजा करनी है, और कहना चाहिए कि 'मुझे और जगत् को सद्बुद्धि दीजिए, जगत् कल्याण कीजिए।' वे इतना बोलेंगे, तो उन्हें संस्कार मिलेंगे और माँ-बाप का कर्मबंधन छूटेगा। दूसरा बच्चों को 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार हो' रोज़ बुलवाना चाहिए। शुरुआत में दो-तीन दिन थोड़ा इधर-उधर होंगे, लेकिन फिर दो-तीन दिनों बाद थोड़ा अच्छा लगने के बाद, अंदर स्वाद उतरने के बाद बल्कि बच्चे ही याद करेंगे।

प्रश्नकर्ता : घर में आरती करने का क्या महत्व है?

दादाश्री : आरती करने का महत्व और कुछ नहीं, आरती का आपको फल मिलता है। आरती

का फल, यहाँ मेरी उपस्थिति में जैसा मिलता है न ऐसा फल कहीं और नहीं मिलता। और वह तो आपका सेटिंग किया हुआ, लेकिन फिर भी आरती का फल बहुत उच्च प्रकार का मिलेगा, घर में करोगे तब भी। इसलिए सभी ने सब सेट कर लिया है। पूरे दिन दूषित वातावरण खड़ा न हो जाए और निरे क्लेश के वातावरणवाले घर हैं। अब अगर उसमें आरती सेट कर ली हो न, तो पूरे दिन, बच्चों में और घर के सभी लोगों मे फर्क आ जाता है और आरती में बच्चे वगैरह खड़े रहते हैं, इसलिए उन बच्चों के मन अच्छा रहता है फिर। और चिढ़े हुए बच्चे होते हैं न, उन बच्चों को क्या? यह तपिश, बेचैनी और बाहर का कुसंग, इसलिए कुचरित्र के ही विचार आते रहते हैं। उसमें अपनी यह जो आरती है न, वह ठंडक देती है, और उन विचारों को भगा देती है। बचाने का साधन है यह। बहुत सुंदर है। कितने लोग तो दो-बार करते हैं, सुबह और शाम। 'विधि-आरती-असीम जय जयकार हो' यह सब। इसलिए सभी बच्चे रेग्युलर हो जाते हैं और समझदार हो जाते हैं।

सामनेवाले के हित के लिए प्रार्थना

प्रश्नकर्ता : कोई दो व्यक्ति लड़ रहे हों, हम उनके लिए प्रार्थना करें कि 'दादा भगवान, उनका भला करना, उन्हें सद्बुद्धि देना,' तो ऐसा कहना ठीक है या फिर हम कहते हैं न कि 'भगवान उन्हें सद्बुद्धि देना, उनका अच्छा करना,' वैसा कहना ठीक है?

दादाश्री : 'भगवान सद्बुद्धि देना,' वह भी ठीक है और यह 'दादा भगवान सद्बुद्धि (देना)' वह भी ठीक है। दोनों अच्छी बातें हैं। ऐसा है न, माँ-बाप हमेशा 'बच्चे का भला हो, भला हो' ऐसा करते रहते हैं। गुरु भी ऐसा कहते रहते हैं कि 'भला हो, भला हो।' बाकी लोगों को नहीं कहना चाहिए। उनके हृदय में तो इतना बल नहीं होता है न! लेकिन आशीर्वाद देना तो सब से उत्तम चीज़ है।

अस्पताल में रोज़ देखने जाते हैं न, तो वे सभी कहते हैं कि 'इसे ठीक हो जाए तो अच्छा, भला हो।' कोई ऐसा नहीं कहता कि व्यवस्थित में जो हो सो। ऐसे कहेगा तो उल्टा उसी को मारेंगे।

प्रश्नकर्ता : हाँ, उसका भला हो।

दादाश्री : इसलिए आशीर्वाद ही देना चाहिए। हर एक बात में ऐसा नियम ही है। 'व्यवस्थित में हो तो,' यह तो हमें कुछ लेना-देना नहीं है ऐसी बात कहलाएगी। 'सभी का अच्छा हो, भला हो,' कहने से ही खुद का भी अच्छा ही होगा। सामनेवाले को सुख हो ऐसी प्रार्थना कर सकते हैं न! सच्चे दिल की प्रार्थना निष्फल नहीं जाती।

वाणी से होनेवाली हिंसा के सामने प्रार्थना का बल

अगर आपने किसी को कठोर शब्द कहा हो, तो उसके फल स्वरूप, काफी समय तक आपको उसके स्पंदन सुनाई देंगे। हमारे मुँह से एक भी अपशब्द नहीं निकलना चाहिए। सुशब्द होने चाहिए, लेकिन अपशब्द नहीं होने चाहिए। और उल्टा शब्द निकला तो खुद के अंदर भावहिंसा हो गई, उसे आत्महिंसा माना जाता है। अब लोग यह सब चूक जाते हैं और पूरे दिन क्लेश ही करते रहते हैं। और लोगों को बोलना कहाँ आता है? बेध्यानी में बोलते हैं। उसमें (ऐसा) उनका इरादा नहीं है, कोई इच्छा नहीं है। इन जीवों को भान ही नहीं रहता है न कि, क्या बोलना वह! अपनी पत्नी के बारे में भी उल्टा बोलते हैं। खुद के बारे में भी उल्टा बोलते हैं न। 'मैं नालायक हूँ, बदमाश हूँ' ऐसा भी बोलते हैं, बिना भान के बोलते हैं। उसे मन में जमा नहीं करना है। 'लेट गो' करके चलने देना है। उसे करुणा कहते हैं। करुणा किसे कहते हैं? सामनेवाले की

मूर्खता पर प्रेम रखना। मूर्खता पर बैर तो पूरा जगत् रखता है।

प्रश्नकर्ता : जब बोलते हैं न, तब ऐसा नहीं लगता है कि यह मूर्खता कर रहा है।

दादाश्री : उस बेचारे के हाथ में सत्ता ही नहीं है। टेपरिकॉर्डर गाता रहता है। हमें तुरंत पता चल जाता है कि यह टेपरिकॉर्डर है। जोखिमदारी समझे तो बोलेगा ही नहीं न।

प्रार्थना से उत्पन्न हो स्याद्वाद वाणी

प्रश्नकर्ता : नौ कलमों में आता है कि स्याद्वाद वाणी बोलनी चाहिए। लेकिन व्यवस्थित शक्ति के अनुसार वैसी वाणी निकलनी होगी तो निकलेगी। इन दोनों का मेल कैसे बैठेगा?

दादाश्री : जिसने व्यवस्थित शक्ति को अभी समझा ही नहीं है, यह 'ज्ञान' नहीं लिया है, उसके लिए वाणी व्यवस्थित शक्ति के अनुसार नहीं होती है। क्योंकि उसका अहंकार खुला है न! इसलिए जैसे चाहे बदल सकता है। भगवान से प्रार्थना करे कि मेरी वाणी किसी को तंतीली न लगे, किसी को कठोर न लगे, वैसी प्रार्थना करे तब ऐसे करते-करते स्याद्वाद होती जाती है। लेकिन जिसने ज्ञान लिया हो, उसका सिर्फ डिस्चार्ज ही रहा है इसलिए उसकी वाणी व्यवस्थित के अनुसार निकलती है। उसे उसका निकाल कर देना है। वह फिर से अब नया संग्रह नहीं करता, ज्ञान नहीं लिया हुआ व्यक्ति संग्रह करता है।

पश्चाताप सहित की गई प्रार्थना छुड़वाएगी हिंसक कर्म

प्रश्नकर्ता : एग्रिकल्चर (खेतीबाड़ी) कॉलेज में हमें पढाई के लिए कीट-पतंगे पकड़ने पड़ते हैं और उन्हें मारना पड़ता है, तो उससे पाप बंधता है क्या? अगर पकड़ेंगे नहीं तो हमें मार्क्स नहीं मिलते हैं परीक्षा में, तो हमें क्या करना चाहिए?'

दादाश्री : तो एक घंटा भगवान से रोज़ प्रार्थना करो कि 'भगवान यह मेरे हिस्से में ऐसा कहाँ से आया?' क्या सभी लोगों को ऐसा होता है? तेरे हिस्से में आया है, तो भगवान से प्रार्थना करना कि 'हे भगवान, क्षमा माँगता हूँ। अब ऐसा नहीं आए ऐसा करना।'

प्रश्नकर्ता : मतलब, इसमें जो प्रेरणा देनेवाले टीचर होते हैं न, वे हमें ऐसा प्रेरित करते हैं कि आप इन कीट-पतंगों को पकड़ो और इस तरह से एल्बम बनाओ, तो उन्हें कोई पाप नहीं लगेगा?

दादाश्री : वह हिस्से में बट जाता है, प्रेरणा देनेवाले को साठ प्रतिशत और करनेवाले को चालीस प्रतिशत!

प्रश्नकर्ता : यह कोई भी चीज़ जो हो रही है वह व्यवस्थित के नियम के अनुसार वह ठीक नहीं मानी जाएगी? वे निमित्त बने और उन्हें करना पड़ा। तो फिर उनके हिस्से में पाप क्यों रहे?

दादाश्री : पाप तो इसलिए लगता है कि ऐसा काम अपने हिस्से में नहीं आना चाहिए। फिर भी अपने हिस्से में ऐसा आया? अगर बकरे काटना हिस्से में आए तो अच्छा लगेगा?

प्रश्नकर्ता : अच्छा तो नहीं लगेगा। लेकिन दादा अगर ऐसा हो कि करना ही पड़े तो? अनिवार्य रूप से करना ही पड़े, चारा ही न हो, तो क्या?

दादाश्री : पछतावे सहित करना चाहिए, तभी काम का है। एक घंटे पछतावा करना पड़ेगा रोज़, एक कीट बना दे, देखें? क्या फॉरेन के साइन्टिस्ट बना देंगे एक कीट?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो संभव ही नहीं है न दादा!

दादाश्री : तो फिर अगर बना नहीं सकते तो मार कैसे सकते हैं?

उन लोगों को, सब को प्रार्थना करनी चाहिए भगवान से, कि 'हमारे हिस्से में यह कहाँ से आया, खेतीबाड़ी का धंधा कहाँ से आया।' खेतीबाड़ी में तो निरी हिंसा ही है लेकिन ऐसी नहीं, यह तो खुली हिंसा है।

प्रश्नकर्ता : अगर बहुत अच्छा नमूना मारकर ले आए, तब वापस खुश होते हैं कि 'मैं कैसा मारकर लाया, कितना अच्छा नमूना मिला, मैंने कितना अच्छा पकड़ा ! उसके अधिक मार्क्स मिलते हैं।

दादाश्री : खुश होता है न! वहाँ पर उतना ही कर्म लगेगा, उसका फल आएगा वापस, जितने खुश हुए उतनी ही कड़वाहट भुगतनी पड़ेगी।

अहिंसा का अनुमोदन होता है, भावना और प्रार्थना से

अब इन गूँगे प्राणियों-जनावरों की हिंसा नहीं करनी चाहिए, गौ हत्या नहीं करनी चाहिए, ऐसी भावना हमें विकसित करनी चाहिए और अपने अभिप्राय दूसरों को समझाने चाहिए। जितना अपने से हो सके, उतना करना चाहिए। उसके लिए कोई दूसरे के साथ लड़ मरने की ज़रूरत नहीं है। कोई कहे कि, 'हमारे धर्म में कहा है कि हमें मांसाहार करना है।' अपने धर्म ने मना किया हो, उस कारण से झगड़ा करने की ज़रूरत नहीं है। हमें भावना विकसित करके तैयार रखनी चाहिए, अर्थात् जैसा भावना में होगा वैसी ही संस्कृति चलेगी।

प्रार्थना करनी चाहिए, ऐसी भावना करनी चाहिए, उसकी अनुमोदना करनी चाहिए। कोई व्यक्ति यदि नहीं समझ रहा हो, तो हमें उसे समझाना चाहिए। बाकी यह हिंसा तो आज से नहीं, वह तो पहले से चल रही है। यह जगत् एक रंग का नहीं है।

सेल्फ रियलाइज़ के बाद करने को मना किया है

प्रश्नकर्ता : यह सभी लोग अलग-अलग तरह से, कोई नमाज़ पढ़ता है, कोई प्रार्थना करता है, कोई ध्यान करता है, कोई घंटी बजाता है, कोई सेवा-पूजा करता है, तो अगर हम खुद ही, वह हैं तो, फिर यह प्रार्थना या नमाज़ या बंदगी करने की क्या कोई ज़रूरत है?

दादाश्री : अगर आप चंदूभाई हो, तो आपको जो अपनी बुद्धि के अनुसार सूझे उस अनुसार आप को किसी भी तरह की प्रार्थना करनी है। जब तक आप चंदूभाई हो, तब तक यह सब करना है और अगर आपको सेल्फ रियलाइज़ हो जाए तो आपको कुछ भी करना नहीं रहता। क्योंकि आप खुद ही निज स्वरूपी हो गए, प्रकाश स्वरूप। अभी तो यह अंधेरा स्वरूप है। अंधेरा स्वरूप यानी बुद्धि से चलती है आपकी गाड़ी और आप खुद सेल्फ (आत्मा) हो जाओ, तो करना कुछ नहीं रहता।

अंतर्यामी भगवान से प्रार्थना

तुझे पसंद है अंदर के भगवान? अंदर बैठे हैं। अंतर्यामी भगवान। उन्हें प्रार्थना करनी है कि 'हे अंतर्यामी भगवान, मुझे मन की मज़बूती दीजिए,' तो मज़बूती देंगे। और 'श्रद्धा भी दीजिए,' तो देंगे। अब अंतर्यामी भगवान की प्रार्थना करनी है। अब तू बाहर के भगवान की तलाश मत करना, अंदर के भगवान की तलाश कर।

'हे अंतर्यामी परमात्मा! आप प्रत्येक जीवमात्र में विराजमान हैं, वैसे ही मुझ में भी विराजमान हैं। आपका स्वरूप ही मेरा स्वरूप है। मेरा स्वरूप शुद्धात्मा है।'

'हे शुद्धात्मा भगवान! मैं आपको अभेद भाव से अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।'

'अज्ञानतावश मैंने जो-जो दोष किए हैं, उन सभी दोषों को आपके समक्ष ज़ाहिर करता हूँ। उनका हृदयपूर्वक बहुत पश्चाताप करता हूँ और आपसे क्षमा-याचना करता हूँ। हे प्रभु ! मुझे क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए और फिर से ऐसे दोष न करूँ, ऐसी आप मुझे शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए।'

'हे शुद्धात्मा भगवान! आप ऐसी कृपा करें कि मुझे भेदभाव छूट जाएँ और अभेद स्वरूप प्राप्त हो। मैं आप में अभेद स्वरूप से तन्मयाकार रहूँ।'

जागृति लाती है प्रार्थना में परिवर्तन

अब यदि वह ऐसा जागृति में रखे कि वह अजागृति से जो प्रार्थना कर रहा है, वह गलत है तो पुरुषार्थ में अच्छा परिवर्तन आ जाएगा। वर्ना अगर जागृति नहीं रखेगा तो वापस वैसी की वैसी फिल्में छपती रहेंगी।

प्रश्नकर्ता : जागृति रखने की बुद्धि कब सूझेगी? जागृति रखने की ऐसी बुद्धि सूझनी चाहिए न?

दादाश्री : जागृति आएगी ही नहीं न! जागृति कब आती है कि जब उसे उन कर्मो से दु:ख होने लगे, तब भगवान से प्रार्थना करता है कि, 'हे भगवान, ऐसे कर्म से बचाइए,' तब जागृति आती है। यानी भगवान का नाम देने से ही, जागृति आती है। भगवान जागृति नहीं देते। सिर्फ नाम लेने से ही जागृति आ जाती है।

प्रश्नकर्ता : हमारे धर्मग्रंथों में लिखा है कि, जितनी ज़्यादा माला फेरोगे जागृति उतनी ही ज़्यादा आएगी। यह बात सही है?

दादाश्री : माला सही हो तो आएगी, अर्थात् माला सही होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सच्चे माला की परिभाषा क्या है?

दादाश्री : उपयोगपूर्वक होनी चाहिए। यानी हमारा मन माला में ही रहना चाहिए। मन बाहर जाए तो सही नहीं कहलाती।

'दादा' तो हैं निमित्तमात्र'

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, प्रार्थना करने से उसका कर्म कुछ कम हुआ होगा या ऐसा कुछ तो हुआ होगा न?

दादाश्री : नहीं, वह तो निमित्त है। जब वह होनेवाला होता है तब यह दादा याद आते हैं। निमित्त उनका और उस निमित्त से, बोलने से ही हमें फल मिलता है। लेकिन वह साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स है। एक एविडेन्स है, वे खुद नहीं करते। वहाँ वीतरागों के पास चार आने भी नहीं हैं। लोग उनके पास पैसों की आशा लेकर जाते हैं, स्त्रियों की (मेरी शादी हो जाए ऐसी) आशा लेकर जाते हैं, बच्चे हो जाएँ ऐसी आशा लेकर जाते हैं। लेकिन उनके पास कुछ है ही नहीं। वीतरागता है, राग-द्वेष रहितपना, निर्भय, संपूर्ण इन्डिपेन्डेन्ट।

जो प्रार्थना की, वह दिया भगवानने तो अब और क्या?

प्रश्नकर्ता : दादा के मिलने से पहले मंदिर जाकर मूर्ति से, भगवान से याचना करता था कि 'जिन्होंने आत्मा देखा है, जाना है, अनुभव किया है उन्हीं के ही दर्शन हों। वे मुझे आत्मा के दर्शन करवाएँ।' तभी तो दादा मिलें, लेकिन अब मुझे क्या याचना करनी चाहिए वहाँ पर? अब उन प्रभु से मैं क्या याचना करूँ?

दादाश्री : अब वापस याचना करोगे, तो बल्कि चिढ़ जाएँगे कि 'भाई, तुझे जो चाहिए था वह दे दिया, फिर से आ गया?'

प्रश्नकर्ता : तो अब क्या प्रार्थना करनी चाहिए?

दादाश्री : प्रार्थना करने को रहा ही नहीं न! वह करने का रहा ही कहाँ? यहाँ दादा के पास ही आ जाना है। क्योंकि आपको जो चाहिए था वह दे दिया। देवी-देवताओं से जो इच्छा की थी हमारी वह इच्छा उन्होंने पूरी कर दी। अब वहाँ जाकर, कहना है कि 'भगवान! आपका बहुत उपकार, अनंत उपकार, आपका। बस मिल गया!' कहना।

प्रश्नकर्ता : अनंत उपकार आपका दादा।

सच्चे दिल की प्रार्थना मिलवा देती है ज्ञानी से

प्रश्नकर्ता : सच्चे दिल की प्रार्थना संयोग इकट्ठे कर देती हैं।

दादाश्री : हिंदुस्तान में चाहे कहीं भी, घर पर बैठकर, प्रार्थना करे, तो मुझसे मिलवा देती है, अगर सच्चे दिल से हो तो। 'दिल से चाहिए, बुद्धि से नहीं।' दिल्लगी, वह सच्चा हृदय। वह तो टूट नहीं जाता जल्दी से। 'दिल्लगी' कहते हैं न, नहीं कहते!

प्रश्नकर्ता : 'दादा बहुत जीएँ' ऐसी प्रार्थना कर सकते हैं? और क्या ऐसा करना ठीक है?

दादाश्री : उस प्रार्थना के आधार पर ही तो मैं जी रहा हूँ।

बावा की शुद्धात्मा से प्रार्थना

आप बावा होकर आपके 'मैं' (दादा भगवान) से कहो कि 'हे दादा भगवान, ज्ञानी बावा को चार-पाँच साल, इस देह में गुज़ारने दो। ताकि यहाँ सब लोगों के काम पूरे हो जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दीर्घायुष्य दीजिएगा दादा को।

दादाश्री : वापस यह संयोग नहीं मिलेगा इसलिए कहता हूँ। यह जो संयोग है न, वह टॉप मोस्ट संयोग है। वापस नहीं मिलेगा इसलिए कहता रहता हूँ। क्योंकि आप नहीं जानते, मैं जानता हूँ कि यह संयोग कैसा है!

ये कौन बोल रहे हैं? मंगलदास (ए. एम. पटेल) बोल रहे हैं ये बावा (ज्ञानीपुरुष) कैसे हैं उनका बोल रहे हैं। इन ज्ञानी बावा के कहे अनुसार रहोगे न, तो आरपार पहुँच पाओगे! ऐसा है यह ज्ञानी बावा वास्तव में!

प्रश्नकर्ता : दादा भगवान चाहे सो कर सकते हैं!

दादाश्री : लेकिन वह तो आप बावा की बात कर रहे हैं न? लेकिन अगर भगवान राज़ी होंगे, तभी बावा कर सकेगा न? करने का काम बावा का है, लेकिन राज़ी किसे होना है?

प्रश्नकर्ता : राज़ी होना है दादा भगवान को।

दादाश्री : इसलिए इतनी भावना करना।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। सभी प्रार्थना करेंगे तो काम बनेगा।

प्रत्यक्ष की उपस्थिति में, प्रार्थना रूबरू

प्रश्नकर्ता : मैं प्रार्थना करूँ कि, 'दादा मेरी ये गाँठे हल्की हो जाएँ और मैं इनसे मुक्त हो जाऊँ,' वह भावना कर सकते हैं, बैठे-बैठे? आपके सामने? और पता तो रहता ही है कि कौन सी गाँठें हैं।

दादाश्री : हाँ, वह सब काम करना, वह तो मेरे रूबरू हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : किसी भी चीज़ का लोभ हो, तो दादा से आशीर्वाद माँगने से वह जल्दी कम होगा या आपके सामने बैठकर मन में माँगते रहने से?

दादाश्री : मन में करने से भी हो जाएगा। खुद इस अभिप्राय से मुक्त हो जाना चाहिए मेरी उपस्थिति में, कि 'मुझे अब लोभ अच्छा नहीं

लगता' तो आपका कम हो जाएगा। मेरी साक्षी में होना चाहिए। अकेले-अकेले करने से नहीं चलेगा न! वह तो ऊब कर भी बोलता है कि 'भई यह लोभ अच्छा नहीं है।'

प्रश्नकर्ता : आप जब फिज़िकली उपस्थित नहीं हों, तब आपके फोटो के सामने बैठकर बोलें कि 'दादा, मेरी इन चीज़ों से मुझे मुक्त करो ऐसी मेरी दृढ़ इच्छा है।' तो उसका परिणाम मिलता है न?

दादाश्री : हाँ, तो भी वह साक्षी में कहलाता है। लेकिन इसके जैसा नहीं, रूबरू जैसा नहीं। रूबरू का, प्रत्यक्ष के वातावरण का असर होता है।

यों, ज्ञानी को भी ज़रूरत है प्रार्थना की

प्रश्नकर्ता : क्या ज्ञानी को भी प्रार्थना की ज़रूरत होती है? किसलिए?

दादाश्री : ज्ञानी में जितने अंश कम हों, वे जितने अपूर्ण हों, उतने अंशों तक उन्हें स्तुति की ज़रूरत है। स्तुति किसकी करनी है? पूर्णांशवाले, संपूर्ण अंश, जो सर्वांश हों, उनकी स्तुति करनी है। अर्थात् ज्ञानी को कुछ कमी हो, तो वे खुद भी करते हैं, स्तुति अंदरवाले भगवान की। वे सर्वांश हैं, व्यवहार से अलग-अलग हैं और निश्चय से एक ही हैं।

प्रार्थना से शांति होती है लेकिन मोक्ष नहीं हो पाता

प्रार्थना करें, उस क्षण भगवान हाज़िर हो जाते हैं, अन्य कुछ नहीं। जब आवरण खिसक जाए, तब आपको सुख बरतता है। प्रार्थना की.. उसका अर्थ (इच्छा) तो आप करते ही हो, इस संसार की प्रार्थना का मतलब क्या? विशेष इच्छा। यानी भगवान से प्रार्थना करते ही तुरंत यह स्वरूप उत्पन्न हो जाता है, शांति उत्पन्न होती है लेकिन वह मोक्ष में नहीं ले जाती। मोक्ष तो अज्ञान दूर हो और ज्ञान हो तभी होता है। जैनों में राग-द्वेष को अज्ञान कहते हैं। अज्ञान जाए तो यह सब चला जाएगा। अज्ञान यानी 'मैं कौन हूँ' वह भान आ जाए, तब यह बरकत आएगी, वर्ना कभी बरकत नहीं आएगी।

ज्ञान का ज्ञान जानने के लिए प्रार्थना करनी पड़ती है

जिस अज्ञान पर ज़्यादा श्रद्धा बैठ गई हो, तो वह क्रिया बहुत देर तक चलती है और कम श्रद्धा हो तो वह क्रिया वेग से खत्म हो जाती है। थोड़ा-सा अज्ञान हो तो वह जल्दी खत्म हो जाता है। अज्ञान का ज्ञान जानने में उसकी *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) शक्तियाँ खर्च होती हैं और ज्ञान का ज्ञान जानने के लिए प्रार्थना करनी पड़ती है कि, 'मुझे ये शक्तियाँ दीजिए।' अज्ञान का ज्ञान जानने के लिए तो *पुद्गल* शक्तियाँ यों ही मिलती ही रहती हैं। जबकि ज्ञान के लिए वैसी शक्तियाँ नहीं मिलती हैं। असत्य, चोरी, अब्रह्मचर्य, उनमें *पुद्गल* की शक्तियाँ सरलता से मिलती ही रहती है। जबकि उससे विरुद्ध सत्य, ब्रह्मचर्य, के लिए शक्तियाँ माँगनी पड़ती हैं। वह ज्ञान-दर्शन से जानकर, श्रद्धा से शक्तियाँ माँगने से शक्तियाँ मिलती हैं। अज्ञान नीचे उतार देनेवाला है और उसमें *पुद्गल* शक्तियाँ आती ही रहती हैं। जबकि ज्ञान ऊँचा चढ़ानेवाला है, उसके *पुद्गल* विरोधी होने के कारण शक्तियाँ माँगनी पड़ती हैं, तभी ऊँचा चढ़ा जा सकता है।

प्रश्नकर्ता : इस ज्ञान का ज्ञान जानने के लिए प्रार्थना क्या है?

दादाश्री : प्रार्थना अर्थात् ज्ञानी से याचना करना, विशेष प्रकार की याचना करना। प्रार्थना यानी यथार्थ स्वार्थ की याचना करना, संसारिक स्वार्थ की नहीं। यथार्थ स्व वह खुद आत्मा है और उसके (अर्थ) हेतु के लिए याचना करना वह स्वार्थ की याचना है। उसे वास्तव में स्वार्थ कहते हैं।

प्रार्थना से पौद्‌गलिक शक्तियाँ खत्म

प्रश्नकर्ता : आगे बढ़ने के लिए ये शक्तियाँ कैसे माँगे और किससे माँगे?

दादाश्री : अपने शुद्धात्मा से, 'ज्ञानीपुरुष' से शक्तियाँ माँगनी चाहिए और जिन्हें स्वरूप ज्ञान न हो, वह अपने गुरु, मूर्ति, प्रभु जिन्हें भी मानता हो उनसे शक्तियाँ माँगनी चाहिए। खुद में जो-जो गलत दिखे उसकी 'लिस्ट' बनाना चाहिए और उसके लिए शक्तियाँ माँगनी चाहिए। जो गलत है उसे श्रद्धा (विश्वास) से, ज्ञान से तय कर लो कि, यह गलत ही है। उसके प्रतिक्रमण करो। 'ज्ञानी' से शक्तियाँ माँगो कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए' तो वह खत्म हो जाएगा। बड़ी गाँठे हों तो उन्हें सामायिक से खत्म कर सकते हैं और अन्य छोटे-छोटे दोष तो प्रार्थना से ही खत्म हो जाते हैं। प्रार्थना के बिना उत्पन्न (खड़ा) हुआ प्रार्थना से खत्म हो जाता है। यह सब अज्ञान से खड़ा हो गया है। *पौद्‌गलिक* शक्तियाँ प्रार्थना से खत्म हो जाती हैं। फिसलना आसान है और चढ़ना कठिन है, क्योंकि फिसलने में *पौद्‌गलिक* शक्तियाँ होती हैं।

प्रार्थना से तू मेरे अभेद स्वरूप में आएगा

जब कोई दु:ख आ जाए, तब भगवान की प्रार्थना करना। तो दु:ख मिट जाएगा। भगवान क्या कहते हैं कि, अगर तुझे कोई दु:ख आ जाए तब तू तब मुझसे प्रार्थना करेगा तो तुझे शांति हो जाएगी और यदि तुझे संसार अच्छा नहीं लगता, तो मेरी शरण में आ जा, फिर तू और मैं एक ही हैं। फिर तुझे दु:ख है ही नहीं।

भगवान के पास प्रकाश के अलावा अन्य कोई चीज़ नहीं है। अगर यह संसार सहन नहीं हो रहा हो, तो प्रार्थना करना, तो तुझे संयोग मिलेंगे और तू मेरे अभेद स्वरूप में आ जाएगा, यानी परमानंद में रहेगा।

प्योर प्रार्थना से, इच्छाओं की पूर्णाहुति

हृदयपूर्वक ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए कि 'इस जगत् के भौतिक सुखों में से मेरी इच्छाओं की पूर्णाहुति कीजिए। मेरी इच्छाएँ खत्म हो जाएँ ऐसा कीजिए।' पहले ऐसी प्रार्थना करनी है। अध्यात्म की याचना करने को सच्ची प्रार्थना कहते हैं।

यों ही ऐसी प्रार्थना करें, जैसे रटता है तोता कि 'आया राम, गया राम' ऐसी प्रार्थना नहीं होनी चाहिए। तोता 'राम, आया राम' बोलता है, वह क्या समझकर बोलता है? उस तरह से ये प्रार्थनाएँ करेंगे तो नहीं चलेगा। वह तो समझकर, सोचकर और दिल पर असर हो वैसी, हृदय पर असर हो वैसी प्रार्थना होनी चाहिए, समझ में आ रहा है न?

प्रार्थना सच्ची होनी चाहिए, बिल्कुल सच्ची होनी चाहिए। हार्ट शुद्ध कब होगा कि सभी प्रकार के पश्चाताप होते रहते हों। यह तो कुछ बातों में होता है और कुछ बातों में उसे आनंद भी आता है। किसी की निंदा करने में आनंद आता है। तो भगवान दिल को देखते हैं, तब हार्ट गंदा ही दिखता रहता है।

एक व्यक्ति भगवान से रोज़ प्रार्थना करे कि, 'हे भगवान! मुझे सुखी करो, सुखी करो।' दूसरा व्यक्ति प्रार्थना करे तब बोलता है कि, 'हे भगवान! घर के सभी लोग सुखी हों।' उसमें खुद तो आ ही जाता है। सच्चा सुखी दूसरावाला व्यक्ति होता है, पहलेवाले की अरज़ी बेकार जाती है। और हम तो जगत् कल्याण की भावना करते हैं, उसमें खुद का आत्यंतिक कल्याण आ जाता है।

'हे दादा भगवान! आप तो मोक्ष लेकर बैठे हैं, आप हमें मोक्ष दीजिए। वर्ना हमें निमित्त मिलवा दीजिए।' इस प्रार्थना से अपना काम हो जाएगा!

- जय सच्चिदानंद

दादावाणी

शक्तियाँ माँगने से जागृति बढ़ती है

सुबह-सुबह तय ही करना है कि दादा आपकी आज्ञा में ही रहें ऐसी शक्ति दीजिए। ऐसा तय करने के बाद धीरे-धीरे बढ़ता जाएगा।

प्रश्नकर्ता : शुरुआत में ज्ञान लेने के बाद इसी अनुसार करते जाएँ और अपना भाव पक्का होता जाए और वैसे-वैसे फिर और अधिक आज्ञा में रह पाते हैं।

दादाश्री : और अधिक रह पाते हैं। अपने ज्ञान में, अक्रम विज्ञान में सामान्य रूप से चौदह साल का कोर्स है। उनमें से भी अगर कोई बहुत कच्चे हों न, तो उन्हें ज़्यादा टाइम लगता है और जो बहुत पक्के हों उन्हें ग्यारह साल में ही हो जाता है। यों निष्ठा बढ़ती जाती है, लेकिन चौदह साल का कोर्स है अपना। चौदह साल में सहज हो जाता है। मन-वचन-काया भी सहज हो जाते हैं, सहज।

'कोई *डखोडखल* (दखलंदाज़ी) नहीं करूँ ऐसी शक्ति दीजिए' चरणविधि में ऐसा रोज़ बोलते हैं, इसलिए वह वाक्य लोगों के लिए अच्छा काम करता है। और यदि वह जानता ही नहीं हो कि *डखोडखल* नहीं करनी है तब *डखोडखल* हो जाती है बार-बार और फिर पछतावा होता है। यह कैसा है? 'कल्याण हो' हमने ऐसा भाव बोला हो तो उसका असर होता है। और अगर ऐसा कुछ न बोले हों तो फिर उसका असर नहीं होता तब उल्टे परिणाम आते हैं। ठीक से, अच्छे परिणाम नहीं आते।

प्रश्नकर्ता : खुद पुरुष हो जाने के बाद अगर अपनी प्रकृति खराब हो तो उसे सुधारने का पुरुषार्थ करना चाहिए या सिर्फ देखते रहने का ही पुरुषार्थ करना है?

दादाश्री : सुधारने का कोई भी पुरुषार्थ नहीं करना है। वह तो अब सुधरेगी नहीं। उसका *निकाल* ही करना है। छलनी से जितना छन गया उतना ठीक है और अगर नहीं छना तो वापस छानना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : तो फिर अंदर '*डखोडखल* नहीं करूँ' ऐसा बोलने की ज़रूरत ही कहाँ रही?

दादाश्री : वह तो, '*डखोडखल* नहीं करूँ' ऐसा जो बोलते हैं न, तो उसी अनुसार रास्ते पर आ जाता है। फिर वह दखल नहीं करता है। और अगर नहीं बोलें तो फिर वैसी ही दखल करेगा।

प्रश्नकर्ता : हम *पुद्गल* से होनेवाली क्रियाएँ देख रहे हों तो उसमें *डखोडखल* कहाँ पर हो जाती है?

दादाश्री : उसमें *डखोडखल* नहीं होती। जब हम चरणविधि पढ़ते हैं उस समय '*डखोडखल* नहीं करूँ ऐसी शक्ति दीजिए।' सुबह आप ऐसा बोलते हो न तो पूरे दिन वह ज्ञान रहता है। *डखोडखल* नहीं करते। जैसे हमने किसी से कहा हो कि 'वहाँ पर जा रहे हो लेकिन सिनेमा में मत जाना, हं!' तो फिर वह ज्ञान उसे वहाँ पर हाज़िर रहता है, उसकी वजह से वापस आ जाता है। नहीं तो अगर हमने नहीं कहा हो तो सिनेमा में जा आता है। इसलिए इस पर से, क्या निमित्त बनेगा, वह हमें पता चल जाता है। डिस्चार्ज में क्या बोलता है, उससे हमें पता चल जाता है कि क्या निमित्त बनेगा। बहुत सूक्ष्म बात कह रहा हूँ यह आपको!

(परम पूज्य दादाश्री की वाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पटना **दिनांक : 1-2 अप्रैल - आप्तपुत्रों के संग सत्संग शिविर** **संपर्क :** 7352723132
स्थल : ठाकुर प्रसाद कम्युनिटी हॉल, कीद्वाईपुरी, इन्कम टेक्स के पास, गोलंबर (नोर्थ), पटना.

पटना **दिनांक : 3 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 7352723132
स्थल : ठाकुर प्रसाद कम्युनिटी हॉल, कीद्वाईपुरी, इन्कम टेक्स के पास, गोलंबर (नोर्थ), पटना.

बिहार शरीफ **दिनांक : 4 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9097379997
स्थल : ममता मेरेज हॉल, डाक बंगला रोड, कागज़ी महोल्ला, नालंदा, बिहार शरीफ.

हजारीबाग **5 अप्रैल** **संपर्क :** 9798126101 **राजनंदगाँव** **13 अप्रैल** **संपर्क :** 7828415771

धनबाद **दिनांक : 6 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9431191375
स्थल : आर. के. एपार्टमेन्ट, रिलायन्स स्टोर के पीछे, बेंक मोड़, कटरास रोड, धनबाद.

महासमूंद **दिनांक : 9 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 8889944333
स्थल : शासकीय मिड़िल स्कूल, लाफिंग खूर्द, महासमूंद.

रायपुर **दिनांक : 10 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 9329644433
स्थल : जे. एन. पान्डे (गवर्मेन्ट स्कूल), OCM चौक के पास.

दुर्ग **दिनांक : 11 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9300012330
स्थल : आशीर्वाद भवन, MIG मार्केट, पद्मनाभपुर, दुर्ग.

दुर्ग **दिनांक : 12 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9827481336
स्थल : BSNL ओफिस के सामने, साई कोलोनी, गाँव-उतई, जि-दुर्ग.

लखनौ **दिनांक : 1-2 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 9452904656
स्थल : मधुर संगीत विद्यालय, 563/74, चित्रगुप्त नगर, आलमबाग, लखनौ.

वाराणसी **दिनांक : 3 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 9452710927
स्थल : कैवलज्ञान मंदिर, D-64/131, सिग्रा विद्यापीठ रोड, वाराणसी.

वाराणसी **दिनांक : 4 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9452710927
स्थल : श्री दिगम्बर जैन समाज, काशी, B-20/46, भेलुपुर, वाराणसी.

गोरखपुर **दिनांक : 5 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9956758693
स्थल : ग्राम-कोडरीकला, पो.-भीटी रावत, थाना-सहजनवा, गोरखपुर.

गोरखपुर **दिनांक : 6 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 7309061683
स्थल : पूर्बी राजेंद्रनगर, तीरकुटाह बाबा स्थान के पास, गोरखनाथ, गोरखपुर.

कानपुर **दिनांक : 9 अप्रैल** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9452525981
स्थल : श्री श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर, धरमकांटा चौराहा, गोविंद नगर, कानपुर.

आगरा **दिनांक : 10 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9319128468
स्थल : अचल भवन, दरेसी नं.2, आगरा.

बाड़मेर **दिनांक : 14-15 अप्रैल** **समय :** सुबह 9-30 से 12 **संपर्क :** 9314209457
स्थल : साधना भवन, जैन न्याती नोहरे के पास, धानी बाजार, बाड़मेर.

जोधपुर **दिनांक : 16 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9214410659
स्थल : सिद्धेश्वर शिव मंदिर, मोहनपुरा पुलिया के पास, जोधपुर.

पाली **दिनांक : 17 अप्रैल** **समय :** सुबह 10-30 से 12-30 **संपर्क :** 9461251542
स्थल : बालाजी स्कूल, खोडिया बालाजी मंदिर के पास, पाली.

पाली **दिनांक : 17 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9461251542
स्थल : मेवाडा समाज मंदिर, पुलिस लेन के पास, पाली.

दादावाणी

जैतारण **दिनांक : 18 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9928018235
स्थल : गौड़ छात्रावास, गणेश स्कूल के पास, निम्बोल रोड़, जैतारण.

अजमेर **दिनांक : 19 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 8955846534
स्थल : वोर्ड नं.49, सैनी भवन, मीठा कुवा वाली गली, लोहाखान, कल्पक्ष मंदिर के पास.

पूणे **दिनांक : 8 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 7218473468
स्थल : होटल पीचोला, औंध, पूणे.

सतारा **दिनांक : 9 अप्रैल** **समय :** दोपहर 2 से 5 **संपर्क :** 7058503230
स्थल : जयेष्ठ नागरिक संघ हॉल, प्रताप सिंघ उद्यान के अंदर, रजवाडा.

पूणे **दिनांक : 10 अप्रैल** **समय :** सुबह 9-30 से 12 **संपर्क :** 7218473468
स्थल : विमल कुंज, कोरेगाँव पार्क, पूणे.

पूणे **दिनांक : 10 अप्रैल** **समय :** दोपहर 3-30 से 6 **संपर्क :** 7218473468
स्थल : होटल गोल्डन एमरल्ड, महर्षिनगर कोर्नर के पास, मार्केट यार्ड, पूणे.

नासिक **दिनांक : 11 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9021232111
स्थल : पाटीदार भवन, जनरल वैद्य नगर, स्टेशन रोड, पूर्णिमा बस स्टोप, नासरडी, नासिक.

औरंगाबाद **दिनांक : 12 अप्रैल** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 8308008897
स्थल : यशोमंगल हॉल, पन्नालाल नगर, न्यु उस्मानपुरा, औरंगाबाद.

जलगाँव **दिनांक : 14 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 9422354985
स्थल : रीगल पेलेस होल, तीसरी मज़िल, बस स्टेन्ड के पास, एस.पी. ओफिस, जलगाँव.

अमरावती **दिनांक : 15 अप्रैल** **समय :** शाम 5-30 से 8-30 **संपर्क :** 9422335982
स्थल : दोशी वाड़ी, गुलशन मार्केट के पास, जयस्तंभ चौक.

अमरावती **दिनांक : 16 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9422335982
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, कोर्पोरेशन बेंक के नीचे, भारतीय महाविद्यालय के पास, राजापेठ, अमरावती.

नागपुर **दिनांक : 17 अप्रैल** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9970059233
स्थल : श्री नागपुर कच्छी विशा ओशवाल समाज, 57/58, अनाथ विद्यार्थी गृह लेआउट, लकडगंज, नागपुर.

Form No. 4 (Rule No.8)
Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

1. **Place of Publication :** Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. **Periodicity of Publication :** Monthly
3. **Name of Printer :** Amba Offset, **Nationality :** Indian,
   Address : Basement, Parshvanath Chamber, Near New R.B.I. Usmanpura, Ahmedabad-380014
4. **Name of Publisher :** Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality :** Indian,
   Address : Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. **Name of Editor :** Dimple Mehta, **Nationality :** Indian, **Address :** same as above.
6. **Name of Owner :** Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality :** Indian,
   Address : same as above.

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

sd/-

Date : 15-03-2016

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
(Signature of Publisher)

Atmagnani Pujya Deepakbhai's UK-Germany Satsang Schedule (2016)

Contact no. for all centers in UK + 44-330-111-DADA (3232), email:info@uk.dadabhagwan.org

Date	From	to	Event	Venue
30-Mar-16	7-30PM	10PM	Satsang	The Archbishop Lanfranc Academy, Mitcham Rd, Croydon, CR9 3AS
31-Mar-16	6PM	10PM	Gnanvidhi	
1-Apr-16	7-30PM	10PM	Satsang in English	Harrow Leisure Centre, Christchurch Avenue, Harrow, HA3 5BD
2-Apr-16	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang in English	
2-Apr-16	7-30PM	10PM	Satsang	
3-Apr-16	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
3-Apr-16	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
7-15 April			Germany Satsang	Willingen, Germany
16-Apr-16	6PM	8-30PM	Satsang	Krishna Mandir, 10 Beverley Road, Bolton, BL1 4DT
17-Apr-16	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
17-Apr-16	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
18-Apr-16	6PM	8-30PM	Satsang	
22-Apr-16	7-30PM	10PM	Satsang	Shree Prajapati Association, Ulverscroft Road, Leicester, LE4 6BY
23-Apr-16	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang in English	
23-Apr-16	7-30PM	10PM	Satsang	
24-Apr-16	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
24-Apr-16	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 10 से 10-30, दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'साधना'** पर हर रोज़ शाम 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर मंगल से गुरु रात 10 से 10-30, शुक्र से रवि रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8-30 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 11 से 11-30 EST
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में अडालज त्रिमंदिर में आगामी सत्संग कार्यक्रम

दि. **19 मार्च** (शनि), सुबह 10 से 12 - **पूज्य नीरू माँ की 10वी पुण्यतिथि पर विशेष सीडी** तथा **कीर्तन भक्ति**
शाम 4-30 से 10 - **आप्तसिंचन के नए साधको की समर्पण विधि** तथा **विशेष भक्ति**
दि. **20 मार्च** (रवि), शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर

दि. **5-9 मई** (शनि-बुध) - **सत्संग समय की घोषणा बाकी**

सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। 2) इस शिविर में प्रथम दो दिन 'मा-बाप बच्चों का व्यवहार' तथा बाद में दो दिन 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' तथा अंतिम दिन 'पैसों का व्यवहार' पुस्तक पर पूज्यश्री दीपकभाई द्वारा सत्संग होगा तथा आप्तपुत्र भाईयों तथा आप्तपुत्री बहनों द्वारा ग्रुप सत्संग किए जाएँगे। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपके मोबाइल में एफएम सुविधा है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर ही सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकेंगे।)
3) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज़दिकी सेन्टर में और अगर नज़दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (079) 39830400 (सुबह ९-३० से १२ तथा दोपहर ३ से ६) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2016

सत्संग शिविर : दि. 27-28 तथा 30 मई **ज्ञानविधि : दि. 29 मई**
तीर्थ यात्रा : दि. 31 मई - पूज्यश्री के संग यात्रा

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। **इस शिविर के लिए 15 मार्च से 15 मई २०१६ तक रजिस्ट्रेशन होगा।** निम्नलिखित सत्संग केन्द्रों में से अपने नज़दीकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है और यदि आपके नज़दीक में कोई सत्संग केन्द्र नहीं है, तो अडालज मुख्य सत्संग केन्द्र के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. **079-39830400** पर (सुबह 9-30 से 1 और दोपहर 3 से 6) अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें।

दिल्ली	9810098564	**भुवनेश्वर**	9668159987	**नागपुर**	9325412107
जलंधर	9814063043	**रायपुर**	9329644433	**जलगाँव**	9420942944
वाराणसी	9795228541	**भिलाई**	9827481336	**मुंबई**	9323528901
जयपुर	8233363902	**इन्दौर**	9039936173	**पूणे**	7218473468
पाली	9461251542	**भोपाल**	9425023328	**हैद्राबाद**	9885058771
पटना	7352723132	**जबलपुर**	9425160428	**बंगलूर**	9590979099
मुजफ्फरपुर:	7209956892	**औरंगाबाद:**	8308008897	**हुबली**	9739688818
कोलकता	9830093230	**अमरावती**	9422915064	**चेन्नई**	9380159957

अडालज में अविवाहित युवकों के लिए हिन्दी में ब्रह्मचर्य शिविर - दि. 1-2 जून, 2016

जो युवक इस ब्रह्मचर्य शिविर में भाग लेना चाहते है, उसकी उम्र २१ से ३५ के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम १ साल हुआ होना जरूरी है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए 9723707737 पर संपर्क करें।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

मार्च 2016
वर्ष-11 अंक-5
अखंड क्रमांक - 125

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

प्रार्थना

अंतर्यामी परमात्मा को नमन,
शक्ति हमेशा मिलती रहे आपसे;
ऐसी कृपा कर दो, अज्ञान दूर हो, आतम ज्ञान पाएँ...
अंतर्यामी परमात्मा को नमन,
शक्ति हमेशा मिलती रहे आपसे;
सद्‌बुद्धि प्राप्त हो, व्यवहार आदर्श हो, सेवामय जीवन रहे... अंतर्यामी...
मात-पिता का उपकार ना भूलें, हरदम गुरु के विनय में रहें,
दोस्तों से स्पर्धा ना करेंगे, एकाग्र चित्त से पढ़ेंगे हम; (२)
आलस्य को टालो, विकारों दूर कर दो,
व्यसनों से हम मुक्त रहें...
ऐसे कुसंगों से बचा लो हमें...
मन-वचन और काया से, दुःख किसीको हम ना दें...
चाहे ना कुछ भी किसी का, प्योरिटी ऐसी रखेंगे हम; (२)
कल्याण के हम सब, निमित्त बने ऐसे,
विश्व में शांति फैलाएँ... अंतर्यामी...
पूर्ण रूप से हम खिलें, मुश्किलों से ना डरें...
धर्मों के भेद मिटा दें जग में, ज्ञानदृष्टि को पाकर हम; (२)
अभेद हो जाएँ, लघुतम में रहकर हम,
प्रेम स्वरूप बन जाएँ... अंतर्यामी...

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.